खंड : XIV अंक : 5 व 6

मई - जून, 2002

चैतन्य लहरी

परमात्मा को इस बात की चिन्ता नहीं कि आप कितने धनवान है या कितने निर्धन। वो तो केवल इतना खते हैं कि आप आध्यात्मिक रूप से कितने वैभवशाली हैं। उन्हें आपकी उच्च शिक्षा, उच्च उपाधियों तथ लंकरणों से कुछ लेना–देना नहीं। वो तो केवल इतना देखते है कि आप कितने पावन एवं अबोध हैं।

परम पूज्य माताजी

1 दिवाली पूजा – लॉस एंजलिस 18.11.2001

11 क्रिसमस पूजा – गणपतिपुले 25.12.2001

21 मकर संक्रान्ति पूजा – पालम विहार 13.4.2002

23 गणेश पूजा – 8.8.1989

37 औरंगाबाद पूजा – 19.12.1989

39 श्रीरामपुर पूजा – 21.12.1989

दिवाली पूजा

लॉस एंजलिस – 18.11.2001

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

आज का दिन अत्यंत मंगलमय है क्योंकि आज असुर का दमन हो गया है। आसुरी शक्तियाँ दो कारणों से अपनी शक्ति सर्वत्र फैलाती हैं :– पहला कारण है आप में ज्ञान का अभाव। आँखें बन्द करके आप गलत चीज़ों का अनुसरण करते चले जाते हैं और सोचते हैं कि आप शक्तिशाली हैं। यह भ्रम केवल समस्याएं ही नहीं खड़ी करता, पूर्ण विनाश भी करता है। निःसन्देह हमने एक बहुत बड़ी चुनौती का सामना किया परन्तु सुगमता से इसका समाधान कर लिया। यह गलत सिद्धांतों पर आधारित थी तथा समस्या खड़ी करना इसका उद्देश्य था। किसी लक्ष्य को लेकर यह समस्या बनाई गई थी परन्तु कोई भी इस बात की कल्पना न कर सकता था इतनी सुगमता से और इतने कम समय में इसका समाधान हो जाएगा। मेरी इच्छा थी कि दिवाली से पूर्व इस पर काबू पा लिया जाए और मैंने ऐसा कर दिया है।

अज्ञानता के कारण भी लोग बहुत से कार्य करते हैं। किसी भी तथा–कथित धर्म या ऐसी किसी भी चीज़ का जब कोई अनुसरण करता है तो सत्य के विषय में समझ न होने के कारण ही वह ऐसा करता है। सत्य को प्राप्त करने का ज्ञान ऐसे व्यक्ति में नहीं होता फिर भी वह स्वयं को अत्यन्त ज्ञानवान मानता है। यह सब होने के बावजूद भी बहुत से ऐसे दल थे, बहुत से मूर्ख लोग थे जो अज्ञानता के कारण पूरी तरह नष्ट हो रहे थे। सहज में आने वाले आप लोगों को पूर्ण ज्ञान है। यह ज्ञान अत्यन्त–अत्यन्त सूक्ष्म है, यह सतही ज्ञान नहीं है। यह बहुत सूक्ष्म है। परन्तु इसका ज्ञान न होने के कारण लोग अज्ञान का गलत मार्ग अपना लेते हैं और अच्छे कार्य करने वालों का विरोध करते हैं। परन्तु परमात्मा की शक्ति सर्वोपरि है। उसी महान शक्ति के अस्तित्व के प्रमाणित करने के लिए ही यह सारा नाटक खेला गया है। यह अत्यन्त अच्छी तरह से कार्यान्वित हुआ है और आप सब सहज योगियों के लिए यह बहुत महान उपलब्धि है कि आप यह नाटक देख सकते हैं। बहुत से तथा–कथित सफल लोग इस नाटक को नहीं देख सकते, परन्तु आप इसे देख सकते हैं क्योंकि आप तो मात्र दर्शक हैं। पूरा विश्व यद्यपि इसका अंग–प्रत्यंग है, आप इससे बाहर हैं और इसे स्पष्ट देख सकते हैं। जो भी कुछ

घटित हुआ है उस पर किसी को विश्वास नहीं होता–कि यह दिवाली से पूर्व समाप्त हो जाएगा। तो यह सब इसी प्रकार होता है–मूर्खता का यह सृजन–और हम भी कभी–कभी सोचते हैं कि यह मूर्खतापूर्ण चीज़ अन्य लोगों को प्रभावित करेगी। प्रभावित करना महत्वपूर्ण नहीं। इन हारे हुए लोगों को यदि आप देखें तो उन्होंने कौन सी छाप छोड़ी हैं? विश्व को प्रभावित करने के लिए वे वहाँ थे, यह दर्शाने के लिए कि वे महान योद्धा तथा लड़ाके हैं। परन्तु उन्होंने क्या छाप छोड़ी? वे आत्मसाक्षात्कारी हों या न हों फिर भी देख सकते हैं कि यह चमत्कार है। घटनाओं का इस प्रकार घटित होना चमत्कार है।

अब नया पक्ष आरम्भ हो गया है। आप सब के सम्मुख खुली चुनौती है कि लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें। अब लोग इतने अज्ञानी नहीं हैं, वे इतने अभिशप्त नहीं हैं। अब मैं उन्हें परिवर्तित हुए पाती हूँ। सत्य के प्रति उनका दृष्टिकोण बदल गया है और अब वे समझ गए हैं कि जिन अनुभवों में से वे गुज़रे हैं सत्य उससे परे हैं। यह बहुत आवश्यक है क्योंकि यदि मानव किसी बात को सत्य मान ले तो वह उसी में फँस जाता है। चाहे जो भी हो वो उसी में फँसा रहता है। वो ये परखने का भी प्रयत्न नहीं करता कि यह सत्य है या नहीं। पशु इस बात को समझ सकते हैं क्योंकि उनके अन्दर बुराई को सूँघने की अन्तर्जात शक्ति होती है। परन्तु हम मानवों में ये शक्ति नहीं होती। कोई व्यक्ति यदि अपराधी है तो कुत्ता उस पर भौंकेगा या उस पर झपटकर उसे गिरा देगा। वो सभी ऐसे कार्य करते हैं जो सामान्यतः वे नहीं करते। किस प्रकार कुत्तों में ये गुण विकसित हो गया है कि कौन चोर है और कौन नहीं। हम मनुष्यों में उच्च चेतना है और हम बहुत सी चीज़ों के विषय में सोचते हैं, पशु इन सब चीज़ों के विषय में नहीं सोच सकते। हम अपना खाना पकाते हैं पशु नहीं पकाते। मुझे तो कई बार ऐसा लगता है कि हम अपना मस्तिष्क भी पकाते हैं। जिस प्रकार लोग व्यवहार करते हैं और अपने अहं के कारण सत्य से कन्नी काटने का प्रयत्न करते हैं उस पर मुझे हैरानी होती है।

जो कुछ भी घटित हुआ ये सब एक नाटक था परन्तु आप इसका ठीक से अध्ययन करें और स्वयं पर लागू करके ये देखें कि कहीं आप भी इस नाटक के अंग–प्रत्यंग तो नहीं। इसके लिए आपको ऊँचा उठना होगा, और ऊँचा उठना होगा, अपने अहं प्रति अहं और अपने बन्धनों से ऊँचा और वहाँ से स्वयं को देखना होगा। आपको स्वयं देखना होगा कि यह क्या है। क्यों मैं यह सब कार्य कर रहा हूँ क्यों मेरा चित्त ऐसा है, मेरे बाधित होने का क्या कारण है – मेरी नासमझी का क्या कारण है, क्यों मैं गलत चीज़ों को स्वीकार करता

हूँ? एक बार जब आप इसे देखने लगेंगे और अपने अन्दर निहित मूर्खता को यदि आप तनिक सा भी देख लेंगे तब आप उन लोगों को भी क्षमा कर सकेंगे जिनकी बुद्धि को भ्रमित कर दिया गया है–पूर्णतः भ्रमित तथा इसी भ्रम के प्रभाव में जिन्होंने सभी कार्य किए हैं। स्थिति के अनुसार अब आप अन्य सब लोगों से ऊँचे उठ चुके हैं और उन सब से अधिक चेतन हैं। अतः आपको यह बात समझनी होगी, केवल तभी आप उनके सभी अपराधों को क्षमा कर सकेंगे। **जो लोग वास्तव में खराब हैं उनके लिए चिन्तित होना आपका कार्य नहीं है। उन्हें नष्ट करना परमेश्वरी शक्ति का कार्य है।** परन्तु आपको स्वयं को देखना है और स्वयं पता लगाना है कि क्या आपमें अभी तक भी ऐसे कुछ विचार बचे हुए हैं। कहने से अभिप्राय है कि आप दर्पण को अच्छी तरह से साफ करें ताकि अपनी वास्तविकता को ठीक से देख सकें। प्रयत्न करें, देखें और इसे साफ करने की कोशिश करें। स्वयं को शुद्ध करना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने बहुत से गलत कार्य किए हैं, मुझे उन पर दया आती है। उन्होंने गलत कार्य किए हैं। ये देखना उनकी जिम्मेदारी है कि वो क्या करते रहे और क्यों करते रहे। ये सब दुष्कर्म करने की क्या आवश्यकता थी? ये सारा अन्तर्वलोकन बहुत अच्छी तरह से कार्य करेगा। तब आपकी वास्तविक शक्तियाँ जाग उठेंगी–आत्म साक्षात्कार देने की आपकी शक्तियाँ, अपने देश की तथा पूरे विश्व की समस्याओं को समझने की आपकी शक्तियाँ। जब आपको ये महसूस हो जाएगा कि आप ही इन गलत चीज़ों से लड़ने वाले सिपाही हैं, इनको समाप्त करने की जिम्मेदारी आपकी है तो चीज़ें कार्यान्वित हो जाएंगी। **सभी कार्य आप परमेश्वरी शक्ति पर नहीं छोड़ सकते। आपको अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग करना होगा और इस कार्य को करना होगा क्योंकि आप ही परमात्मा के सिपाही हैं।** निःसन्देह इस सुन्दर विचार के साथ ही आप अपना शुद्धीकरण करने लगते हैं। आपको सभी रहस्य जानने की कोई आवश्यकता नहीं है कि क्या घटित हो रहा है और कैसे घटित हो रहा है, वो कैसे कार्य कर रहे हैं, ये आपका कार्य नहीं है। आप एक सिपाही हैं, आपको तो बस युद्ध करना है, अपनी तथा अन्य लोगों की अज्ञानता से युद्ध क्योंकि सिपाहियों में जब अहं भाव आ जाता है तो प्रायः वो असफल हो जाते हैं और असफल होने पर उनके मस्तिष्क में अन्य बाधाएं आ जाती हैं। बाधाएं नहीं होनी चाहिएं, आपको आगे बढ़ते जाना है। अब आपके सम्मुख कोई भी बाधा नहीं है। ये बात मिथ्या है कि हमारे सम्मुख अभी भी कुछ ऐसी समस्याएं हैं जिन पर हम काबू नहीं पा सकते। लोगों की चेतना की उत्क्रान्ति सुगम कार्य नहीं

है। लगता है कि इसके लिए पार–पथ की दूरी बहुत कम है। परन्तु वास्तविकता यह नहीं है, बात ऐसी नहीं है। कुछ लोगों को आज्ञा के बन्धनों से निकालना कभी–कभी बहुत कठिन कार्य होता है। मैं देखती हूँ कि इस बिन्दू पर आकर आपमें से कुछ लोग असफल हो जाते हैं।

अन्तर्वलोकन इस स्थिति से उबरने का सर्वोत्तम उपाय है। जब आपको ऐसा प्रतीत हो कि आप हमेशा ठीक हैं तो अन्तर्वलोकन करना सर्वोत्तम है। क्या मैं सभी कुछ ठीक–ठीक कर रहा हूँ या नहीं, क्या मैं अपनी उत्क्रान्ति के लिए कार्य कर रहा हूँ। भ्रम की स्थिति ऐसी होती है कि आप सोचते हैं कि आप ठीक कार्य कर रहे हैं। **हमारे सहजयोग में कुछ लोग बहुत आगे आते हैं, ये कार्य करते हैं, वो कार्य करते हैं। परन्तु ये सब कार्य करने के पीछे उनका उद्देश्य क्या है? कार्य करने में उनका उद्देश्य केवल इतना होता है कि लोग उन्हें देखें कि वो कार्य कर रहे हैं।** वास्तव में हमारा उद्देश्य अपने अन्दर की वास्तविकता को देख पाना होना चाहिए। आपको देखना चाहिए कि आपके अन्दर क्या समस्या है। यह बात आप अच्छी तरह से समझ सकते हैं कि आप अपने तथा अन्य लोगों के लिए सहायक रहें। उदाहरण के रूप में – एक बहुत बड़ा भवन है, उसके आस–पास के सारे भवन भूचाल में धराशायी हो जाते हैं परन्तु यह अड़ोल खड़ी रहता है। इसका कारण ये है कि यह बहुत दृढ़तापूर्वक बना है। इसी प्रकार सहजयोग भी बहुत दृढ़ता–पूर्वक बनाया गया है, कोई इसे न तो नष्ट कर सकता है और न ही तोड़–मरोड़ सकता है। सभी को यही कार्य करना है। उदाहरण के रूप में कुछ लोगों ने आकर मुझे बताया कि आपके सहजयोगी ऐसे हैं, वैसे हैं, बहुत दिखावा करते हैं। मैंने कहा, "वास्तव में? मुझे यक़ीन नहीं होता कि वो ऐसे हो सकते हैं! मैंने कहा, कि जो भी व्यक्ति ऐसा है उससे मैं मिलना चाहूँगी। तो वो कहने लगे नहीं, आप स्वयं पता लगा सकती हैं कि वो कौन हैं और क्यों इस तरह का व्यवहार करते हैं। मैंने उत्तर दिया **मैं स्वयं तो सब कुछ जानती हूँ, परन्तु मैं चाहती हूँ कि आप लोग ये समझें कि अन्य लोगों के दोष खोजना बहुत सुगम है और बहुत अच्छा भी लगता है परन्तु आप अपने अन्दर के दोषों को देखें। कौन सी चीज़ें हमें भ्रमित कर रही हैं? अपनी चेतना को बेहतर बनाने का यह सर्वोत्तम उपाय है।** जैसे कार में जाते हुए आपको सड़क का ज्ञान होना चाहिए, आपको ये पता होना चाहिए कि आप कैसे गाड़ी चला रहे हैं। आपको देखना चाहिए कि कौन सी समस्याएं हैं। परन्तु ऐसा करने की अपेक्षा यदि आप अपने को बहुत बड़ा तूफान समझते हैं तो ठीक न होगा।

आज का दिन बहुत बड़े उत्सव का दिन है। मैं कहना चाहूँगी कि दिवाली का उत्सव मनाना अत्यन्त–अत्यन्त आनन्ददायी है। परन्तु ये आनन्द केवल हमारे लिए ही नहीं है, यह पूरे विश्व के लिए है। **हमें पूरे विश्व के लिए कार्य करना हैं अपने लिए, अपनी नौकरियों के लिए, धनार्जन के लिए हमने कार्य किया परन्तु अन्य लोगों के लिए आप क्या कर रहे हैं? अपने अन्दर झाँककर ये देखना बहुत आवश्यक है। सहजयोग में केवल ऐसे ही लोग उपयोगी हो सकते हैं।** क्योंकि उनके अन्दर करुणा एवं स्नेह–भाव होता है और वे अन्य लोगों के हित के लिए कुछ करते हैं। किसी के लिए कुछ करना अत्यन्त आनन्ददायी होता है। दीप जब जलता है तो आपको प्रकाश देने के लिए अपने शरीर को जलाता है। ऐसे लोग हमें सिखाते हैं कि अपनी उच्च चेतना का आनन्द लेने के लिए हमें स्वयं भी कुछ करना चाहिए। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सब कार्यान्वित होगा। इस प्रकाश को स्थिर तथा उत्साहपूर्ण बनाने के लिए भी मैं प्रयत्न कर रही हूँ ये हो रहा है। आप लोग अपने कुम्भ भरने के लिए उत्सुक हैं, आप ऐसा कर सकते हैं। मेरे चिन्ता करने से आपका कोई भला न होगा। अपनी वास्तविक तस्वीर यदि आप देखना चाहेंगे तो भी उसमें आपको रुकावट होगी। सर्वप्रथम आप स्वयं से मोह त्याग दें। अन्यथा आप कभी ये न जान पाएंगे कि आपमें क्या दोष हैं। स्वयं से मोह में यदि आप फँसे रहेंगे तो अपने दोषों को न जान पाएंगे।

अब, आखिरकार हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? हमें पूरे विश्व को शान्तिमय बनाना है। निःसन्देह स्वयं को परिवर्तित करना बहुत महान बात है परन्तु अन्य लोगों को परिवर्तित करने से भी हम विश्व की सारी समस्याओं का अन्त कर सकते हैं। विश्व के सभी लोग यदि अच्छे बन जाएं और सहजयोगी बन जाएं तो आप कल्पना करें कि ये विश्व कैसा हो जाएगा! मेरे उस स्वप्न के बारे में सोचें कि हमें सभी लोगों का हृदय परिवर्तन करना है। ये कार्य हम कर सकते हैं। सभी लोगों को हम अच्छा बना सकते हैं। बिना परिवर्तित हुए ये लोग प्रकाशविहीन दीपक सम हैं। लोगों में यदि परिवर्तित होने की संभावना है तो हमें सभी तरीके, सभी विविधाँ उन्हें परिवर्तित करने के लिए अपनानी चाहिएं। मुझे विश्वास है कि अत्यन्त शीघ्र ऐसा दिन आएगा जब आप कहेंगे 'श्रीमाताजी अब हम बिल्कुल सुरक्षित हैं'।

बीते हुए समय तथा उसकी समस्याओं के विषय में न सोचें। अब आप इन पर काबू पा चुके हैं। अपना आनन्द लें। स्वयं पर विश्वास करें और इसे कार्यान्वित करें। मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही अत्यन्त तेजी से यह घटित होगा। आपकी भी यही इच्छा है। इसे कार्यान्वित करने की विधियाँ आपके

पास हैं, इसे करने की जिज्ञासा भी आपमें हैं। हमारी मुख्य चिन्ता यही होनी चाहिए कि 'किस प्रकार मैं इस व्यक्ति को परिवर्तित कर सकता हूँ?' हर परिचित को आप परिवर्तित कर सकते हैं। आप एक व्यक्ति को सहज के विषय में बताएं तो दूसरा व्यक्ति भी इसका अनुसरण करने लगता है– जैसे आज जब हम हवाई अड्डे पर आए तो बहुत से लोगों ने मेरी ओर अपने हाथ फैलाए हुए थे। मैंने पूछा "ये लोग कौन हैं?" वे सहजयोगी नहीं थे। ऐसा करते हुए उन्होंने किसी को देखा होगा, ये बात मैं उनसे पूछ न सकी। परन्तु सभी ने बताया कि अपने हाथों पर वे शीतल लहरियाँ महसूस कर रहे हैं। इसके विषय में वे कुछ भी न जानते थे, कुण्डलिनी के विषय में वे कुछ भी न जानते थे, कुछ भी नहीं। फिर ये शीतल लहरियाँ क्यों आ रही हैं? हमने तो केवल अपने विचार उन्हें बताने हैं और उन पर नाराज़ होने के स्थान पर अपना प्रेम उन्हें देना है। उन्हें अवसर प्रदान करना बहुत अच्छी बात है। आप आश्चर्य–चकित होंगे कि परिवर्तित होने के लिए वे कितने उत्सुक हैं। बनावटी चीज़ें जो उनके पास हैं उनसे वे तंग आ चुके हैं। आप हैरान होंगे कि कितने लोग आपसे आत्म–साक्षात्कार लेने की प्रतीक्षा कर रहे हैं! उन्हें भी दिवाली मनाने और दिवाली का आनन्द लेने का अवसर प्रदान करें। केवल एक दीप से आप दिवाली नहीं मना सकते। दिवाली मनाने के लिए आपको बहुत से दीपों की आवश्यकता है। अपने दीप से आपको अन्य दीप प्रज्जवलित करने होंगे। ये किसी भी दीपक को प्रज्जवलित कर सकता है। अतः किसी भी कीमत पर, किसी भी स्थान पर इस कार्य को करें। मैं कुछ सहजयोगियों से मिली और उनसे पूछा कि तुमने क्या किया है? वो कहने लगे कुछ नहीं, हमने कुछ भी नहीं किया। क्यों? आपने यदि कुछ भी नहीं किया तो आपका आत्म–साक्षात्कार पाने का क्या लाभ हैं? आप किसी को आत्म–साक्षात्कार नहीं देना चाहते, किसी से आप सहजयोग की बात नहीं करना चाहते, ऐसा करने में आपको शर्म आती है! कुछ अन्य–सहजयोगियों से मैं मिली तो उन्होंने कहा, कि श्रीमाताजी हम अभी आपके कार्यक्रम से लौटे हैं। आपको इतना विलम्ब कैसे हो गया? क्योंकि हमें बताया गया कि बम्ब का खतरा है। तो आप बाहर प्रतीक्षा कर रहे थे? हाँ। कितने लोग? हम सभी। हजारों लोग वहाँ प्रतीक्षा कर रहे थे और वहां कोई बम्ब न था। जब उन्होंने कहा कि यहाँ कोई बम्ब नहीं है तब हम अन्दर गए और हमें आत्मसाक्षात्कार मिला। परन्तु आप तो आत्म–साक्षात्कारी लोग थे नहीं, हमें ऐसा एहसास था कि हमें कुछ समय प्रतीक्षा करनी है। परन्तु अब हमें पूर्ण विश्वास है कोई हमें हानि नहीं पहुँचा सकता, कष्ट नहीं दे सकता, हम पर काबू नहीं पा सकता। हम स्वयं ही स्वयं को हानि पहुँचाते हैं। अतः मैं पुनः कहूंगी कि सहजयोग में अन्तर्वलोकन बहुत

महत्वपूर्ण है। प्रकाश आपके अन्दर है, आपको इसकी देखभाल करनी है।

बहुत से लोगों के मुँह से जब मैंने सुना कि उन्हें दिवाली का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। कल यहाँ जो वर्षा हुई वह कितनी समय पर थी। विश्व के इतिहास में ऐसा कभी कभी घटित नहीं हुआ। तो कल ही क्यों ये वर्षा हुई और आपको एक नया अनुभव देने का प्रयत्न किया? आज ऐसा समय है कि प्रकृति भी जानती है, और हमें भी जानना चाहिए, कि यह विशेष कार्य का समय है। मुझे जो पत्र मिलते हैं प्रायः उनमें बीमारी के विषय में लिखा होता है या सहजयोगियों के माता–पिता या सम्बन्धियों की बीमारी के बारे में, कुछ पत्र टूटी हुई शादियों के विषय में बताते हैं। सभी प्रकार की बेवकूफियों के विषय में लोग लिखते हैं। इसका कारण ये हैं कि या तो ये लिखने वाले आत्म–साक्षात्कारी नहीं हैं या अधकचरे हैं। अन्यथा वे सोचते कि क्यों हमें श्रीमाताजी को इसके विषय में लिखना है। हम स्वयं इस कार्य को कर सकते हैं। ऐसी चीज़े लिखने की अपेक्षा व्यक्ति को लिखना चाहिए कि उसने कौन सी उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, किस प्रकार ये उपलब्धियाँ पाई हैं, किस प्रकार अन्य लोगों का प्रेम प्राप्त किया है, छोटे–छोटे गाँवों में किस प्रकार सहजयोग कार्यान्वित किया है। ऐसा लिखना ये लिखने से कहीं अच्छा है कि 'मेरे माताजी बीमार हैं', 'मेरे पिताजी बीमार हैं' आदि–आदि। ये सारे सम्बन्ध तो आपकी हत्या करने के लिए हैं। अतः न कोई आपका भाई है न बहन, केवल सहजयोगी आपके भाई–बहन है। अब आपके कुछ चचेरे–ममेरे भाई बहन हैं तो होने दें, उनकी चिन्ता करना आपका कार्य नहीं है। यहाँ आने से पहले मुझे कुछ पत्र मिले जिनमें लिखा था कि किसी के चचेरे ममेरे भाई बहन का चचेरा ममेरा भाई–बहन बीमार है तो मैंने उस महिला से पूछा कि क्यों आप इन चचेरे–ममेरे भाई–बहनों के बारे में लिखती रहती हैं? तो कहती है, श्रीमाताजी मैं सहजयोग फैलाने का प्रयत्न कर रही हूँ। ये लोग यदि ठीक हो जाएंगे तो सहजयोग में आ जाएगें।' सहजयोग फैलाने का हमारा ये कोई तरीका नहीं है, ये तो एक प्रकार के विज्ञापन हैं कि आप पहले किसी को रोगमुक्त करें और तब वे सहजयोग में आए। हमें ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं है। मैं कभी किसी को दुख नहीं पहुँचाना चाहती परन्तु मैं आपको सुधारना चाहती हूँ। सूझ–बूझ और विवेक देना चाहती हूँ। आप सहजयोगी किसलिए हैं? अपने सभी सम्बन्धियों आदि को ठीक करने के लिए? हो सकता है वो अपनी गलतियों आदि के लिए बीमार हों ऐसे सब लोगों पर चित्त देने की अपेक्षा आप स्वयं पर चित्त डालें और अपने उत्थान पर चित्त डालें। आपको अपना सम्मान करना होगा। आप यदि उनके सम्बन्धी हैं तो भी ये आपकी ज़िम्मेदारी नहीं है। विवेक इस

बात को समझने में हैं कि हम यहाँ पर उच्च कोटि का विशेष कार्य करने के लिए आए हैं। परन्तु ऐसा होता नहीं और ये लोग लिखने में लगे रहते हैं।

एक महिला का सहजयोग में विवाह हुआ। उसने मुझे पत्र लिखा कि आठ या नौ महीने पहले उसका तलाक हो गया है। सभी लोग अब मुझे कह रहे हैं कि क्यों तुमने सहजयोग में विवाह किया और सहजयोग की आलोचना कर रहे हैं। मैंने कहा, "सहजयोग में विवाह करने के लिए उसे किसने कहा था, मैंने तो नहीं कहा।" तो अब विवाह ही उसके लिए मुख्य चीज़ बन गया है कि मेरे परिवार के सभी लोग ऐसा कर रहे हैं। उन्होंने सहजयोग के लिए क्या किया है? उसके विवाह समस्या यदि ठीक नहीं होती तो वो लोग कहेंगे सहजयोग में कुछ कमी है। उन्हें कहने दो। हमने ऐसा कोई वचन नहीं दिया। मैं हमेशा तुमसे कहती हूँ कि अपनी माँ पिता, ये, वो के बारे में मुझे न लिखा करें। आप यदि उन्हें ठीक करना नहीं जानते हैं तो सहजयोग छोड़ दें। आप स्वयं उन्हें ठीक कर सकते हैं, स्वयं इस कार्य को कर सकते है, परन्तु प्रतिदिन आप लोग मुझे इतने सारे पत्र लिख भेजते हैं! मैं उनसे पूछती हूँ कि क्या तुम्हारे पिता सहजयोग में हैं? नहीं, श्रीमाताजी। न कोई भाई सहज में है और न कोई और परिवार का सदस्य। तो क्यों उनके बारे में मुझसे पूछते हैं। उनसे मेरा क्या सम्बन्ध हैं? वे सहजयोगी नहीं है। मैं केवल सहजयोगियों के लिए ज़िम्मेदार हूँ। जब वो सहजयोगी नहीं है तो क्यों आप मुझे कष्ट देते हैं? ये बात समझ पाना असंभव है। सहजयोग में आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करना आवश्यक है। जो लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना चाहते हैं आप उन्हें आत्म–साक्षात्कार दें और ठीक से स्थापित करें। परन्तु आप लोग इधर–उधर भटकने वाले, सभी प्रकार के उल्टे सीधे कार्य करने वालों के पीछे पड़े रहते हैं। आपके इस प्रकार के कार्यों से चिढ़ चढ़ती है और परेशानी होती है। इन लोगों से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। आपको भी उनकी चिन्ता छोड़ देनी चाहिए। आपको यह देखना होगा कि ये बातें बनाने वाले लोग सहजयोग में आ सकें और आप उन्हें बताएं कि वो क्योंकि सहजयोग में नहीं हैं, इसी कारण उन्हें सारी समस्याएं हैं। सहजयोग में न होने के कारण ही उनके साथ ये सारी समस्याएं हैं। हम सब ठीक हैं, बहुत अच्छे हैं। सहजयोग क्योंकि सबके लिए खुला हैं सभी प्रकार के लोग यहाँ आते हैं।

आज दिवाली के दिन मैं चाहूंगी कि **आप स्वयं को वचन दें कि 'मैं उन लोगों पर अपनी शक्ति बर्बाद नहीं करूंगा जो सहजयोग में नही हैं।'** ऐसा करना बहुत आवश्यक है क्योंकि हर समय चित्त व्यर्थ में गलत चीज़ों पर ही बना

रहता है। आपमें यदि थोड़ी सी भी बुद्धि है तो आपको समझना चाहिए कि अब आप बहुत उच्च कोटि के आध्यात्मिक लोगों से सम्बन्धित हैं ऐसे लोग संसार में बहुत कम हैं। इन लोगों की संख्या बहुत कम है। आप लोगों को चाहिए कि जी जान से प्रयत्न करें कि अधिक से अधिक लोगों में इसे प्राप्त करने की जिज्ञासा हो। आप लोगों को बताएं कि आप इस स्थिति को पा चुके हैं और वो भी इसे पा सकते हैं। व्यर्थ की चीज़ों की चिन्ता न करें। आपको इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है कि आप एक विशेष प्रजाति हैं, विशेष प्रकार के सिपाही हैं जिन्हें सहज कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। अतः अपने सम्बन्धियों, भाइयों और बहनों पर शक्ति बर्बाद करना आपके हित में नहीं है। ये बात समझी जानी आवश्यक है कि आप अपनी शक्ति को संभाल कर रखें। किसलिए? सहजयोगियों के लिए। कोई भी व्यक्ति जो सहजयोगी है या सहजयोगी बनना चाहता है उसकी आप सहायता करें। जो लोग सहजयोग में स्थापित हो चुके हैं उनकी आप सहायता करें। क्योंकि हम लोग एक– व्यक्तित्व हैं और परमात्मा के इस एक व्यक्तिव के हम सब भिन्न हाथ हैं। अतः आप लोगों में इस एकाकारिता का स्थापित होना आवश्यक है। इस एकरूपता को अन्य लोग भी देख सकें।

सहजयोग में कुछ लोग तो अत्यन्त सक्रिय हैं और कुछ अन्य केवल आलोचना करने में ही सक्रिय हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये सब आपने कार्यान्वित करना है क्योंकि यह वर्ष महान उपलब्धियों तथा सफलता का है। परन्तु यदि आप मूर्खतापूर्ण कार्य करने लगेंगे तो कुछ भी कार्यान्वित न होगा। निःसन्देह, मैं ये नहीं कहती कि हमारे यहाँ अच्छे सहजयोगी नहीं है। ऐसे लोग हमारे यहाँ हैं। हमारे यहाँ ऐसे सिपाही हैं, उनके पास सभी प्रकार के शस्त्र हैं, सभी कुछ है। परन्तु हमें और अधिक सहजयोगियों की आवश्यकता है क्योंकि हमें यह कार्य सामूहिक रूप से कार्यान्वित करना है। अतः योजना बनाएं कि हमें क्या करना चाहिए।

हाल ही में इस्लामिक आचरण के बारे में बहुत बड़ा वाद–विवाद हुआ था। हम न तो ईसाई हैं, न मुसलमान हैं न हिन्दु। हम इनमें से कुछ भी नहीं हैं क्योंकि ये कहकर कि मैं सहजयोगी हूँ परन्तु ईसाई हूँ, आप स्वयं को तुच्छता में नहीं बाँध सकते। आपको वह तुच्छता छोड़नी होगी। आप पूर्णतः सहजयोगी हैं और किसी भी प्रकार की मूर्खतापूर्ण चीज़ से आपका कोई सम्बन्ध नहीं है। मैंने देखा है कि बहुत से मुसलमान लोग सहजयोग में आते हैं परन्तु उनमें से बहुत कम ही वास्तविक सहजयोगी बन पाते हैं। वो आते हैं, मेरा प्रवचन सुनते हैं आदि–आदि। परन्तु उनमें से बहुत कम ही सच्चे सहजयोगी हैं। सहजयोगी बनने के

पश्चात् आप अपनी जाति, तथाकथित धर्म में दोष खोजने लगते हैं और यदि आप वास्तव में उससे प्रेम करते हैं तो उसे सुधारने का प्रयत्न करते हैं अन्यथा इसे छोड़ देते हैं। विशेष कार्य को करने के लिए आप विशेष लोग हैं। छोटी–छोटी मूर्खतापूर्ण चीज़ों पर आप अपनी शक्ति बर्बाद नहीं कर सकते। ये बात आपको समझ लेनी चाहिए।

इस दिवाली के दिन आपको ये बात समझनी है कि परमात्मा का प्रकाश बनकर चहुँ ओर फैलने के लिए आपको स्वयं को जलाना होगा। परन्तु इसके लिए भी अति में नहीं जाना है। कुछ लोग आकर मुझे बताते है कि श्रीमाताजी हमने अपने माता–पिता को त्याग दिया है, ये त्याग दिया हैं, वो त्याग दिया है फिर भी हम ठीक नहीं हैं। मैंने उनसे पूछा कि ये सब त्यागने की क्या ज़रूरत है? किसी चीज़ को यदि आपने पकड़ रखा हो तब तो आप इसे त्यागें, और ये भी स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। नहीं, हम अपने परिवार से, माता–पिता से, देश से बहुत लिप्त थे अब हमने बहुत कुछ छोड़ दिया है। ऐसे अधकचरे लोगों का कोई लाभ नहीं, उनकी ओर ज्यादा ध्यान न दें। वो अधिक ध्यान योग्य नहीं है। ये बात समझ ली जानी चाहिए कि आपको न तो वैसा बनना है न वैसे मित्र बनाने हैं। उन्हें आप सहजयोगी भी न बनाएं। सहजयोगी ऐसा चरित्रवान सिपाही है जो सत्य के लिए लड़ता है। ऐसा व्यक्तित्व जब आप प्राप्त कर लेंगे तो सर्वत्र प्रकाश हो जाएगा। दिवाली के दिन आज मैं आप सब लोगों को हृदय से आशीर्वाद देती हूँ। मैं चाहती हूँ कि आप स्वयं का सम्मान करें और समझें कि इस संस्था में या ये कहें सहजयोग के इस आन्दोलन में आपकी क्या स्थिति है और किस तरह से आप इसे कार्यान्वित कर रहे हैं। चित्त को व्यर्थ की सभी सांसारिक चीज़ों से हटाकर आत्मा पर लाया जाना चाहिए। मैं कहूँगी कि यह अत्यन्त गतिशील शक्ति बन जाएगी और अगले वर्ष जब मैं यहाँ आऊंगी तो स्थिति बिल्कुल भिन्न होगी। हमें परमात्मा के सभी सुन्दर आशीष प्राप्त हो जाएंगे। यह कार्य हमें सामूहिक रूप से अत्यन्त सूझबूझ के साथ करना होगा।

परमात्मा आपको धन्य करें।

क्रिसमस पूजा

गणपतिपुले – 25.12.2001

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

इतने सारे सहजयोगियों को ईसा मसीह की पूजा में उपस्थित देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। ईसाई–धर्म विश्व में चहुँ ओर फैल गया है और ऐसे बहुत से तथाकथित ईसाई हैं जो कहते हैं कि वे ईसा मसीह का अनुसरण करते हैं। मैं नहीं जानती किस प्रकार! ईसा मसीह परम चैतन्य का अवतरण थे, वो ओंकार थे। वे श्री गणेश थे और उन्हें मानने वाले लोगों को बिल्कुल भिन्न व्यक्ति बनना होगा। परन्तु जिस प्रकार सभी धर्मों में होता है, लोग बेतरतीब उल्टी दिशा में चल पड़ते हैं, बिल्कुल उल्टी दिशा में।

ईसा मसीह के जीवन का सारतत्व उनकी निर्लिप्तता और बलिदान था। जो व्यक्ति निर्लिप्त होता है उसके लिए बलिदान जैसा कुछ नहीं होता, वह तो अपने जीवन को नाटक की तरह से मानता है। इतना महान व्यक्ति पृथ्वी पर अवतरित हुआ और इस तथाकथित ईसाई धर्म की सृष्टि की। और ये युद्धों में तथा सभी प्रकार के पाखण्डों में उलझ गया है! आप लोगों को यह बात समझ आ रही है। वे सत्य के समर्थक थे और ईसाई लोग तो ये भी नहीं जानते कि सत्य है क्या? सत्य ये है कि आप आत्मा हैं और आपको आत्मा बनना है। उन्होंने ही पुनर्जन्म की, आत्म–साक्षात्कार की बात की। परन्तु लोग उनकी कही हुई बातों को भूल गए हैं कि उन्हें क्या प्राप्त करना है। कितनी अजीब बात है कि ऐसे महान लोग पृथ्वी पर अवतरित हुए और हमारे उत्थान के लिए आवश्यक धर्म सृजन किया। मेरी समझ में नहीं आता कि अपने इन गुरुओं की शिक्षाओं के बावजूद भी लोग किस प्रकार मूर्ख बन गए है! यह सारी धन लोलुपता है। केवल इतना ही नहीं यह सत्य पर आधारित नहीं है। मेरे विचार से यह इस धर्म का दूसरा क्रूसारोपण है। कोई भी ऐसा धर्म नहीं है जो वास्तव में बनाए गए सिद्धान्तों पर चलता हो। मैं नहीं समझ पाती कि किस प्रकार थोड़े से पैसे या बतंगड़ बनाने के लिए ये लोग सत्य को तोड़–मरोड़ देते हैं! ईसा मसीह के नाम पर इस प्रकार के कर्मकाण्ड हो रहे हैं। यद्यपि बहुत बार ये लड़खड़ाए हैं और विश्व पर इनके कुप्रभावों का अनुभव भी उन्हें है। प्रतिक्रिया हमारी समझ में नहीं आती कि क्यों इस प्रकार की गोल–मोल चीज़ें आ जाती हैं और लोग उन्हें स्वीकार

कर लेते हैं? किसी भी धर्म को लें। इन दिनों पता नहीं इस्लाम किन चीज़ों की बात कर रहा है! मोहम्मद साहब के जीवन में दो महत्वपूर्ण चीज़ें हैं–पहली मिराज कहलाती है। ये कुण्डलिनी जागृति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। ये बात बिल्कुल स्पष्ट है। दूसरे उन्होंने **जेहाद की बात की। जेहाद अर्थात अपने अंदर की बुराइयों को समाप्त करना, अपने बुरे स्वभाव को समाप्त करना, अपने षड्रिपुओं का वध करना।** इसका अर्थ ये नहीं है कि मुसलमान बनकर अपना वध कर लें। ये तो बेवकूफी भरी बात है। क्या आप इसलिए मुसलमान बने हैं कि आप अपने आपको मार लें, वध कर लें? इसे कर्म काण्ड कहते हुए उन लोगों का मानना है कि ऐसा करने से वह जन्नत में जाएंगे, स्वर्ग में जाएंगे। किस प्रकार आप स्वर्ग में जा सकते हैं? मुसलमान होकर भी आप धार्मिक नहीं हैं, बिल्कुल भी नहीं हैं। इन पापी लोगों की हत्या करके किस प्रकार आप स्वर्ग में जा सकते हैं जहाँ आपको जन्नत का आनन्द मिलेगा? इसका कोई औचित्य नहीं है। परन्तु सर्व प्रथम तो इन मौलाना लोगों ने अपनी पढ़ाई–लिखाई छोड़ दी है, अपनी पढ़ाई–लिखाई को छोड़ दिया है, अपनी पढ़ाई–लिखाई को समाप्त कर दिया है। वे स्वयं को बिल्कुल भी शिक्षित नहीं करते। अतः उन्हें इस बात का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है कि विश्व में वे कहाँ खड़े हैं। उनकी स्थिति क्या है? कुछ थोड़े से लोग पढ़े–लिखे हैं परन्तु वो भी लोगों पर शासन करने के विचार में खोए हुए हैं। परमात्मा के नाम पर और आध्यात्मिकता के नाम पर ऐसे कार्य करना लज्जा जनक है।

अब उन्हें ये बताना हमारा कर्तव्य है कि सत्य क्या है? उन्हें सही आध्यात्मिकता के पथ पर लाना हमारा कर्तव्य है क्योंकि वो खोए हुए हैं, ईसाई भी खोए हुए है, मुसलमान भी खोए हुए हैं, हिन्दु भी खोए हुए हैं, वे सभी खोए हुए हैं। उन्हें बिल्कुल भी समझ नहीं है कि उनके धर्मों ने क्या सिखाया है और उनका कर्तव्य क्या है। अन्ततः ईसा मसीह को क्रूसारोपित कर दिया गया। आप देख सकते हैं।

अतः आप देख सकते हैं कि जब–जब भी सत्य को स्थापित करने का प्रयत्न किया गया, असत्य ने इसे समाप्त कर डालने का प्रयत्न किया। लोग सत्य को सहन न कर पाए। हमारे सामने सुकरात का उदाहरण है। उनकी हत्या करने की क्या आवश्यकता थी? परन्तु लोगों ने उनकी हत्या कर दी। इस प्रकार हम जानते हैं कि धर्म के लिए जो भी लोग मूलभूत थे उन्हें समाप्त किया जा रहा है क्योंकि लोग सत्य नहीं चाहते। वे इसी धर्म को मानते हैं क्योंकि इसके माध्यम से वे लोगों पर सत्ता प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने धर्म बना दिए हैं। मिराज कुण्डलिनी की जागृति है और

वो कहते हैं कि मिराज़ कभी घटित ही नहीं हो सकती। बहुत अच्छा! आपमें से बहुत से लोगों ने आत्मसाक्षात्कार पाया है। आपको कुरान वर्णित चैतन्य– लहरियाँ व शीतल हवा प्राप्त हो गई हैं। परन्तु ये बात मुसलमानों को कौन समझा सकता है। आप यदि कोई बात बताएंगे तो वे आपका गला काट देंगे, बस जेहाद शुरु कर देंगे। तो आज इस आधुनिक समय में भी वे इतने मूर्खतापूर्ण कार्य कर रहे हैं। हम देखते हैं कि लोग सभी मर्यादाओं, धर्म की सभी सीमाओं को पार कर गए हैं।

मैं अमरीका गई तो हैरान थी कि किस प्रकार उन लोगों ने चारित्रिक मूल्यों को भुला दिया है! उनमें चरित्र विवेक बिल्कुल भी नहीं है। चरित्र को वो बाज़ार में बेच रहे हैं, इससे पैसा बना रहे हैं। इसके विपरित मुसलमानों की एक कौम 'वहाबी' कहते हैं कि महिलाएं ही पुरुषों के चरित्र को बिगाड़ती हैं, इसलिए उन्हें पर्दे में रखा जाना चाहिए। उन्हें आवरण में रखा जाना चाहिए। अफगानिस्तान में जो भी महिलाएं सफेद चप्पल पहनती थीं उन्हें पीटा जाता था, उनकी हत्या कर दी जाती थी। भारत में भी, विशेष रूप से उत्तरी भारत में, बहुत से लोगों ने मुस्लिम संस्कृति अपना ली है। उत्तरी भारत में वास्तव में महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। मेरा विवाह भी उत्तरी भारत में हुआ। अतः मैं जानती हूँ कि वहाँ पर पुरुष कितने क्रूर हैं। उत्तरी भारत इन मुसलमानों के कारण प्रदूषित हो चुका है और दक्षिणी कट्टर पंथी हिन्दुओं के कारण। सभी प्रकार के कर्मकाण्ड, बुरे से बुरे भी, दक्षिणी भारत की महिला पर थोपे जाते हैं। महिला के बाल मुँडवाकर उससे मन्दिर की परिक्रमा कराई जाती है, उस पर जल डाला जाता है और वो लड़खड़ाती है, सीधे से चल नहीं पाती। ये सब होते हुए मैंने स्वयं देखा है।

इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ सती प्रथा है अर्थात पति की मृत्यु के पश्चात् पत्नी की हत्या कर डालना। कोई भी ये बात नहीं समझ सकता कि धर्म की सारी जिम्मेदारी महिलाओं पर ही क्यों डाल दी गई है पुरुषों पर क्यों नहीं? परन्तु एक बात अच्छी हो गई है कि अब आप बहुत सी चीज़ें सुधार सकते हैं। मैंने अपने जीवन काल में बहुत सी चीज़ें सुधारीं। मैं हैरान थी कि किस प्रकार मैं यह सब कार्य कर सकी! परन्तु इन मुसलमानों को, इस्लाम पंथियों को सुधारा नहीं जा सकता। अपनी महिलाओं के साथ ये इतने भयानक कृत्य करते हैं और यदि आप उनकी सहायता करने का प्रयत्न करें तो वह भी असंभव है। उदाहरण के लिए संसार में अकेली रह रही महिलाओं के लिए मैंने एक संस्था आरंभ की–उन महिलाओं के लिए जिनके बच्चे थे जो यतीमों की तरह से थे। मुझ हैरानी हुई कि इन महिलाओं में से अधिकतर मुसलमान थीं, और इनके आठ–आठ, दस–दस बच्चे

थे और इनके लिए हमें अब अनाथालय भी बनाना पड़ेगा। अपने धर्म से वे इन्हीं चीज़ों का सृजन कर रही हैं। विधवा महिलाओं के लिए हिन्दुओं में भी अजीब प्रथा है। विधवा महिला के प्रति उनका व्यवहार अति क्रूर होता है। वे इन विधवा महिलाओं को वृंदावन में रहने के लिए विवश करते हैं। मुझे बताया गया कि इन महिलाओं को प्रतिदिन एक रुपया दिया जाता है। इस देश में एक रुपये में कोई किस प्रकार जीवित रह सकता है? ये लोग बहुत से भिखारियों और भिखारिनों का सृजन कर रहे हैं। अगर यही धर्म है तो बेहतर है कि इसे न अपनाया जाए। ये सब काफी हो चुका–ब्राह्मणवाद के माध्यम से सभी प्रकार के कर्म काण्ड। ये ब्राह्मण बिल्कुल किसी काम के नहीं।

धर्म सिखाने वाले लोगों को बहुत उच्च–स्तर का होना चाहिए। सहजयोग में यह दल–दल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं और इस दल–दल में फँसने वाला व्यक्ति समाप्त हो जाएगा। लोगों से आपने ये बात बतानी है कि वो क्या कर रहे हैं? सभी बुराइयों के लिए ये लोग धर्म का उपयोग कर रहे हैं, जैसे इंग्लैण्ड में किसी की मृत्यु हो जाए तो लोग शैम्पेन पीते हैं, किसी के संस्कार के लिए जाते हुए भी वे शैम्पेन पीएंगे। मैं हैरान थी कि ऐसे समय पर भी वे शैम्पेन पीते हैं और इसे धार्मिक कहते हैं! सारे पादरी लोग भी शराब पीते हैं। एक पादरी सहजयोग में आया, मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। वह कहने लगा, "मैं सहजयोग में आऊंगा, परन्तु मैं शराब पीना नहीं छोड़ सकता।" मैने पूछा, "क्यों? क्योंकि बाइबल में लिखा है आपको शराब पीनी चाहिए"। "अच्छा", मैं तो जानती ही न थी!" ये कैसे हो सकता है? **ईसा मसीह** कैसे कह सकते हैं कि आपको शराब पीनी चाहिए? **वे केवल आत्म साक्षात्कारी ही न थे वे तो स्वयं आत्म– साक्षात्कार थे।** वह कहने लगा, आप जो चाहे कहती रहें, ईसा–मसीह ने ये बात कही है। कहाँ? वे एक विवाहोत्सव पर गए थे। बिल्कुल ठीक। उस विवाह में उन्होंने लोगों के लिए शराब बनाई। उन्होंने बिल्कुल शराब नहीं बनाई। वे वहाँ गए और इतने थोड़े समय में उन्होंने पानी में अपना हाथ डाला और पानी का स्वाद अंगूरों के रस जैसा हो गया। हिब्रू भाषा में अंगूरों के रस को भी वाइन करते हैं। मैंने कहा कि मैं भी यह कार्य कर सकती हूँ परन्तु इसका अर्थ ये नहीं है कि मैं लोगों का शराब पीना पसन्द करती हूँ। ऐसी बेवकूफी भरी बात कौन कह सकता है?

महत्वपूर्ण चीज़ तो चेतना है। चेतना ही महत्वपूर्ण है और इसी को यदि आप बिगाड़ देंगे, खराब कर देंगे तो किस प्रकार आप सहजयोगी हो सकते हैं? उनको समझा पाना कठिन था कि आप शराब न पीएं। भारत में भी शराब पीना आम बात हो गई है। शराब पीना ईसाई धर्म के विरुद्ध है, हिन्दू धर्म के विरुद्ध है, इस्लाम के विरुद्ध है। कुरान में

यद्यपि लिखा हुआ है कि शराब न पीएं परन्तु वे सब लोग शराब पीते है और उस धर्म को मानने के स्थान पर बहुत बड़े पापी बन गए हैं। क्या ईसा मसीह ने उनसे यही बनने की अपेक्षा की थी। आपको पावन व्यक्ति बनना होगा। आपको 'निर्मल तत्व' प्राप्त करना होगा। यही सत्य है।

मैंने आपको शालिवाहन के विषय में एक कहानी भी बताई थी। वो कश्मीर में ईसा मसीह से मिले और उनसे उनका और उनके देश का नाम पूछा। ईसा मसीह ने उत्तर दिया, कि मैं एक ऐसे देश से आया हूँ जहाँ लोग मलेच्छ हैं। मलेच्छ अर्थात गन्दगी की इच्छा करने वाले। शालिवाहन ने उनसे कहा, "क्यों नहीं आप वहाँ जाकर उन लोगों को निर्मल तत्वं सिखाते?" वही निर्मल तत्वं आपको प्राप्त हो गया है। यह आपको पावन करता है, आपकी बाधाओं को दूर करता है, आपको आनन्द, प्रसन्नता एवं सत्य प्रदान करता है। आपको यही माँगना चाहिए। अन्यथा सब अंधकार है। आपको प्रकाश नज़र नही आता चाहे आप ईसाई हों, हिन्दु हों, मुसलमान हों या कोई अन्य। आपको सत्य का प्रकाश नहीं प्राप्त हो सकता। यही सत्य का प्रकाश आपको प्राप्त करना है। उसके पश्चात् आपने क्या करना है? यह प्रकाश आपने अन्य लोगों को देना है, आपने अन्य लोगों को परिवर्तित करना है। इस दिशा में आपने बहुत परिश्रम किया है। कई बार तो मैं हैरान होती हूँ कि इतने अच्छा कार्य करने वाले लोग किस प्रकार से इतने विनम्र और भले हैं? किस प्रकार उन्होंने ये उपलब्धि प्राप्त की है ये बात मैं नहीं समझ सकती। निःसन्देह कुछ लोग धन लोलुप और सत्ता लोलुप भी हैं परन्तु इन चीज़ों से आनन्द नहीं मिलता। आपके अन्दर सत्य का प्रकाश ही आनन्द का स्त्रोत है। आप सबने इस आनन्द का अनुभव किया है, परन्तु अब मुझे ये कहना है कि ये अनुभव आपने अन्य लोगों को भी देना है। ये केवल आपके लिए ही नहीं है। अधिक से अधिक लोगों को ये आनन्द अनुभव कराएं। परन्तु आपमें से कितने लोग इस कार्य को करते हैं? कितने लोग ये कार्य करते हैं? सिख जाति के लोग भी हैं, वे सहजयोग में आए परन्तु कहने लगे हम देवी की पूजा नहीं कर सकते। मैंने पूछा, "क्यों?" आश्चर्य की बात है! क्योंकि श्री गुरुनानक देव ने देवी की बात की है। अपनी पुस्तक के पहले वाक्य में उन्होंने लिखा, 'आद्या'। आद्या आदिशक्ति हैं। इसके बावजूद भी यदि मूर्खतापूर्वक सिख लोग ऐसी बातें कहें! क्यों उन्होंने 'चण्डीगढ़' नाम रखा? वे भी मूर्ख हैं। वास्तव में तुलना की कोई बात नहीं।

अब आपको ये समझना है कि क्या आपने जीवन की ये सभी मूर्खताएं त्याग दी हैं या अभी भी आप इनके बन्धन में फँसे हुए हैं? ये बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जब

तक आप इन्ही बन्धनों पर अड़े रहेंगे तो समस्या बनी रहेगी। सहजयोग बहुत कुछ करता है। मैं आश्चर्य चकित थी कि अमरीका में तीन सौ सहजयोगी थे, उन्हें कुछ भी नहीं हुआ। उनमें से कुछ उस गगन चुम्बी इमारत में थे और कुछ सड़क पर थे। वे सभी लोग वहाँ पर थे परन्तु किसी को भी हानि नहीं पहुँची। कुछ ने बताया कि अन्दर किसी ने उनसे कहा, कि यहाँ से भाग जाओ और हम दूसरी दिशा में दौड़ने लगे। कुछ को दौड़ने में देर हुई। मैं नहीं समझ पाई इन तीनों को किस प्रकार से देरी हो गई? परन्तु ये आसुरी लोग जो पूरे विश्व को नष्ट करने की सोच रहे हैं उनमें भी सुधार हो रहा है। यही कारण है कि मैं अमेरिका गई और उन्हें बताया कि यह युद्ध दिवाली तक समाप्त हो जाएगा और ऐसा ही हुआ। ये सोचना कितनी बड़ी मूर्खता है कि वे परमात्मा की सृष्टि को इस प्रकार से नष्ट कर सकते हैं। ऐसा करने वाले वो कौन हैं? विश्व को नष्ट करने का अधिकार उन्होंने किस प्रकार प्राप्त किया है? परन्तु यही मानवीय मूर्खताएं हैं।

ईसा मसीह पृथ्वी पर अवतरित हुए। उन्होंने काफी समय तक कार्य किया परन्तु उन्हें क्रूसारोपित होना था तो वो हो गए। क्रूसारोपण हमारा गौरव नहीं है। उनका पुनर्जन्म (Resurrection) ही गौरवमय है। निःसन्देह उनका पुनर्जन्म हुआ। ये कहना कि ये सब असंभव है उचित न होगा। ऐसा कहने वाले आप कौन होते हैं? आध्यात्मिकता के विषय में आप क्या जानते हैं? आप क्या जानते हैं कि आध्यात्मिक या आध्यात्मिक रूप से सशक्त व्यक्ति के साथ क्या घटित हो सकता है? क्या चीज़ इसे कार्यान्वित कर सकती है? मानव के विषय में जो भी ज्ञान हमें है उसके आधार पर हम निष्कर्ष निकालने लगते हैं और ये निष्कर्ष प्रायः गलत होते हैं। अपने जीवन में देखें। सहजयोगियों के जीवन में बहुत से चमत्कार होते हैं। मैंने किसी से कहा कि इन चमत्कारों को एक पुस्तक में संकलित कर दो। वह कहने लगा कि एक महीने के अन्दर चमत्कारों के जितने पत्र उसे आए वो उसके सिर से भी ऊँचे पहुँच गए। तब मैंने उसे कहा कि इस कार्य को छोड़ दो। परन्तु बुद्धिवादी लोगों को समझा पाना कठिन है। ये सारी बातें उनकी खोपड़ी में डाल पाना असंभव है।

अतः हमें हर संभव प्रयत्न करना चाहिए। जो लोग जिज्ञासु हैं हमें उन पर चित्त देना चाहिए। भारत में तो अब सहजयोग जेलों में भी पहुँच गया है। स्कूलों में तथा सर्वत्र सहजयोग फैल गया है। हाल ही में किसी ने मुझे बताया कि एक कैथोलिक चर्च में भी लोग सहजयोग कर रहे हैं। मैं नहीं जानती कि किस प्रकार उन्हें सहजयोग स्वीकार करने के लिए सहमत किया है। परन्तु इसी प्रकार सहजयोग फैल रहा है। आप सब लोगों को व्यक्तिगत रूप से सभी जगह जाकर इसके विषय में बातचीत करनी है और इसे कार्यान्वित

करना है। परन्तु सहजयोगी बहुत ही शर्मीले हैं। एक बार मैं हवाई जहाज से जा रही थी। मेरे पास बैठी महिला के शरीर से बहुत ही गर्मी निकल रही थी। मैंने उनसे पूछा कि उसका गुरु कौन है? उसने मुझे नाम बताया। मैं हैरान थी कि उसे आध्यात्मिकता का बिल्कुल भी ज्ञान न था फिर भी ऐसे लोगों के बड़े–बड़े घर है, बड़े–बड़े मन्दिर हैं, सभी कुछ है। वह महिला अपने इस गुरु की प्रशंसा किए चली जा रही थी! मैंने सोचा कि यह अत्यन्त निर्लज्ज है। उसके अपने अन्दर कुछ नहीं है। उसके शरीर से इतनी गर्मी निकल रही थी और फिर भी वो अपने गुरु की बातें किए चली जा रही थी! परन्तु सहजयोगी ऐसा नहीं करते। मैं हैरान थी कि सहजयोगी क्यों नहीं सहजयोग के विषय में बात करते? उस दिन मैं किसी के साथ बाज़ार गई। मेरे साथ एक सहजयोगी भी था। मैं हैरान थी कि वह उन्हें मेरे विषय में बताने लगा और आत्म–साक्षात्कार देने लगा। उन लोगों को इससे बहुत प्रसन्नता हुई। कहीं भी आप जाएं अपने पड़ोस में अपने बाजार में, सर्वत्र आपको सहजयोग के विषय में बताना चाहिए। जिस तरह से ईसाई लोग आनन्द गान (Carols) गाते हैं वैसे ही आपको भी भजन गाने चाहिएं और इसके माध्यम से हमें सहजयोग बताना होगा। हम इतने संकोचशील क्यों हैं? इतनी अधिक शर्म से सहजयोग का हित न होगा। अतः कृपा करके अन्य लोगों को आत्म–साक्षात्कार देने का प्रयत्न करें।

आपमें शक्तियाँ हैं। अपने पर भरोसा करें। मैं सोचती हूँ कि सहजयोगियों में आत्म विश्वास की कमी है। बहुत ही कम लोग बाहर निकलकर इस कार्य को करते हैं। इटली और आस्ट्रेलिया में मैंने देखा हैं कि सहजयोग का बहुत प्रचार हुआ है क्योंकि उन लोगों में ये दृढ़–विश्वास है कि जो हमें प्राप्त हुआ है वह हमें अन्य लोगों को भी देना है। हमें यह अन्य लोगों में भी बाँटना है। ईसा–मसीह के जीवन से हमें उनके बलिदान के विषय में समझना है। अपराधियों की तरह से इस प्रकार क्रूसारोपित हो जाना बहुत बड़ा बलिदान है परन्तु उन्होंने ऐसा किया।

इसी प्रकार से आप लोग भी जब सहजयोग का कार्य करते हैं तो आपको ये नहीं सोचना चाहिए कि मेरे दादा का क्या होगा या मेरी दादी का क्या होगा? मेरे कहने से अभिप्राय है कि जितने भी पत्र मुझे मिलते हैं, वे सब इन्हीं चीज़ों से भरे होते हैं। ये बड़ी अजीब बात है। लोग केवल अपने संबन्धियों के विषय में ही चिन्तित हैं। विश्व भर में आपके जो सम्बन्धी हैं उनकी आपको कोई चिन्ता नहीं। आप तो केवल अपनी पत्नी और बच्चे के बारे में चिन्तित हैं। मुझे केवल इसी प्रकार के ही पत्र मिलते हैं। कोई भी ये नहीं लिखता कि उसने कितने लोगों को आत्म–साक्षात्कार दिया। कभी कोई नहीं लिखता कि सहजयोग प्रचार–प्रसार में उन्होंने किस प्रकार सफलता प्राप्त की।

कोई भी नहीं लिखता कितने आश्चर्य की बात है! आपको यही बात बतानी है। मुझे आशा है कि आप सब लोग सहजयोग प्रचार के महत्व को समझते हैं। सहजयोग प्रचार यदि आप नहीं करते तो आप पूर्णतः व्यर्थ हैं। जिस प्रकार यहाँ पर बहुत सी ज्योतियाँ जली हुई हैं वैसी ही मेरे लिए महानतम चीज़ विश्व भर में अधिक से अधिक सहजयोगियों का होना है। **आप यदि इस विश्व को परिवर्तित करना चाहते हैं, कठिनाई और अशान्तिमय व्यर्थ जीवन, जो लोग जी रहे हैं, उनसे यदि आपने बचना हैं तो आपको उन लोगों की रक्षा करनी होगी, उन्हें उबारना होगा। ये आपका कार्य है। सहजयोग के लिए आपने यही दक्षिणा देनी है।** सहजयोग को केवल स्वयं तक सीमित न करें, अपने तक इसे सीमित न करें, अपने तक इसे सीमित न करें।

जो पत्र मुझे मिलते हैं उन्हें यदि आप पढ़ेंगे तो आपको अत्यन्त निराशा होगी। मुझे जो पत्र आते हैं उनमें लोग लिखते हैं कि मैं शादी करना चाहता हूँ। ठीक है। बहुत सी लड़कियाँ है जो कहती हैं कि हम चार वर्षों से सहजयोग में विवाह के लिए आवेदन कर रहे हैं परन्तु हमारा विवाह नहीं हुआ। पहली बात तो ये है कि आपको पता होना चाहिए कि पुरुषों की अपेक्षा महिला प्रार्थियों की संख्या बहुत अधिक है। निःसन्देह वो बहुत अच्छी हैं परन्तु आवेदन करने वाले लड़के यदि 40 होते हैं तो लड़कियाँ 120 या 150 होती हैं। तो किनसे हम उन लड़कियों का विवाह करें? इस बात को आप सोचें। परन्तु ये लड़कियाँ शिकायत भरे पत्र लिखती हैं कि हमने चार बार आवेदन किया है। हम कुछ नहीं कर सकते, उनकी कोई सहायता नहीं कर सकते। अतः आप बाहर जाकर अपनी इच्छानुसार कहीं भी विवाह कर लें या शांति से प्रतीक्षा करें और अपना जीवन सहजयोग को समर्पित कर दें। उनकी इस प्रकार की शिकायतें कि मेरा विवाह हो जाना चाहिए था, अभी तक मेरा विवाह नहीं हुआ, आदि को सुनना बहुत कठिन है। विवाह कभी भी हमारी प्राथमिकता न थी, फिर भी सहजयोग में विवाह की आज्ञा दी गई। परन्तु अब सभी के लिए यह मुख्य कार्य बन गया है। या तो उनका विवाह नहीं होता और यदि विवाह हो गया तो वो प्रसन्न नहीं हैं और यदि उनका तलाक हो गया है तो उनका पुनर्विवाह होना चाहिए। सभी प्रकार की चीज़ें और जटिलताएं – जिनके लिए मैं तैयार नहीं हूँ। सहजयोग इन चीज़ों के लिए नहीं बना। आपका विवाह यदि सफल नहीं है तो यह मेरा काम नहीं है। यदि चीज़ें ऐसे ही चलती रहीं तो हमें विवाह बन्द करने पड़ेंगे। मैं नहीं चाहती कि आप लोग मुझे इनके विषय में लिखें। इनसे पता चलता है कि हम सहजयोग में कितने उथले हैं। आप क्यों न मुझे ये लिखें कि आपने कितने लोगों को आत्म साक्षात्कार दिया है? आपके ऐसा लिखने से मुझे प्रसन्नता मिलेगी, इसकी अपेक्षा कि

आप अपनी पत्नी या किसी अन्य की शिकायत मुझसे करें। ये सब मेरा कार्य नहीं है। हमने आपका विवाह कर दिया अब इसे निभाना आपका कार्य है। परन्तु सहजयोग की ये समस्या है। सभी धर्मों में बहुत से गलत कार्य होते रहे। परन्तु मैं सोचती हूँ कि सहजयोग में विवाह ही एकमात्र समस्या है। सबसे बड़ी बात ये है कि लड़के विवाह के लिए नहीं आते क्योंकि भारत में लड़कों का विवाह बहुत आसानी से हो जाता है। उन्हें दहेज आदि भी मिल जाता है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियाँ पाँच गुना अधिक हैं। लड़के यहाँ विवाह नहीं करना चाहते। वो सहजयोगी होते हुए भी अपने विवाह स्वयं कराएंगे। मैं नहीं समझ पाती कि सहजयोग में आकर आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् भी उनके लिए विवाह का इतना महत्व क्यों है?

सबसे महत्वपूर्ण बात तो ये है कि आपने कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया। यही आपका जीवन है। कमल यदि है तो यह अवश्य खिलेगा। परन्तु इसकी सुगन्ध बिखेरना आवश्यक है। कमल का भी उत्तरदायित्व है तो आप लोगों का क्यों नहीं होना चाहिए? मैं ये नहीं कह रही हूँ कि ईसा मसीह की तरह आप भी क्रूसारोपित हो जाएं, नहीं। मैं कहती हूँ कि आप अपने जीवन का आनन्द लें, शान्ति, सुस्थिरता एवं सन्तुलन प्राप्त करें। परन्तु साथ–साथ आपने सहजयोग भी फैलाना है। अब आपका यही कार्य है। आपकी नौकरी आदि अधिक महत्वपूर्ण नहीं। महत्वपूर्ण कार्य तो केवल ये है कि आपने कितने लोगों को आत्म– साक्षात्कार दिया। यह अत्यन्त कठिन कार्य है क्योंकि लोगों ने सभी महान अवतरणों, सूफियों और सन्तों के सिद्धान्तों को बिल्कुल गड़बड़ कर दिया है। परन्तु आप लोग तो, कम से कम ऐसा न करें। **अतः कृपा करके सोचें कि आप किसे आत्म साक्षात्कार दे सकते हैं, किससे आप सहजयोग की बात कर सकते हैं। हमें फैलना है। आपके अगले पत्र में, मुझे आशा है, मुझे ये सुनने को मिलेगा कि आपने कितने लोगों को आत्म–साक्षात्कार दिया।**

ईसा मसीह के क्रूसारोपण, उनके जन्म और उनके पृथ्वी पर अवतरण के लिए आज्ञा चक्र ही सबसे बड़ा कारण है। आप जिन्हें आत्म–साक्षात्कार देते हैं वो आज्ञा चक्र पार करके सहस्रार में पहुँच जाते हैं। अतः सहजयोग में आप सभी कुछ समझते हैं। ये सब समझना अत्यन्त सुगम है, सहजयोग को समझना अत्यन्त सहज है परन्तु आत्म साक्षात्कार के बाद। अतः आस–पास, चहुँ ओर जाकर आपको देखना होगा कि कितने लोगों को आप आत्म–साक्षात्कार दे सकते हैं। सभी कुछ ठीक है। आपका पूजा करना भी ठीक है, पूजा भी ठीक है। परन्तु सबसे आवश्यक कार्य ये है कि आपने कितने लोगों को आत्म–साक्षात्कार दिया। मैं जानना चाहूँगी कि कितने लोगों को आपने आत्म–साक्षात्कार दिया, विशेष रूप से महिलाएं। क्योंकि महिलाएं

आत्म–साक्षात्कार देने में दुर्बल है। मैं जानती हूँ कि वो बहुत कार्य कर सकती हैं। आखिरकार मैं भी एक महिला हूँ परन्तु सहजयोग में मैं महिलाओं को उस स्तर पर नहीं पाती। वो बहुत कार्य कर सकती हैं परन्तु वे अपने जीवन के महत्व को नहीं समझतीं।

आप बहुत महत्वपूर्ण हैं। कितने लोग ऐसे हैं जिन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ? बहुत से सूफियों को आत्म– साक्षात्कार मिला, उन्होंने काव्य लिखे और बस समाप्त। बहुत से सन्तों ने बहुत कार्य किया, बहुत कुछ लिखा। भारत में ऐसे बहुत से सन्त हुए। उन्होंने सभी ग्रंथ लिखे। लोग इन ग्रन्थों को पढ़ते हैं परन्तु कुछ भी घटित नहीं होता। आपमें आत्म–साक्षात्कार देने की कला है। आपको कुण्डलिनी का ज्ञान है, इसके विषय में आप सभी कुछ जानते हैं। आगे बढ़ें और लोगों से बात करें। जब मैंने सहजयोग आरम्भ किया तो मैं अकेली थी और मैं तो एक महिला हूँ! तो अब आप लोगों का क्या है? **आप सब लोगों के सम्मुख ये चुनौती है** कि आपने कितने लोगों को आत्म साक्षात्कारी बनाया। यहाँ तक कि आपके परिवार के लोग भी सहजयोगी नहीं है। आपकी बेटी और बेटा भी सहजयोगी नहीं हैं। तो ईसा मसीह का महिमागान करने का क्या लाभ है? उनका स्तुति–गान यदि आप करते हैं तो आपको चाहिए कि लोगों को आज्ञा से ऊपर उठाएं। उनका स्थान हमारे अन्दर कितना ऊँचा है। परन्तु आपने कभी उनका सम्मान नहीं किया कि आपके अन्दर विद्यमान इतने उच्च देवता ने आज्ञा चक्र को पार कर लिया, वो अन्य लोगों ने क्यों नही किया?

आज की पूजा के बाद हम देखेंगे कि आपमें कितना दृढ़ संकल्प है। आपको ये बात समझनी चाहिए कि देवी आपकी माँग करने पर नहीं आतीं, वे अपनी इच्छा से आती हैं। उनका अपना ही समय है। परन्तु यदि आप लोगों की संख्या बहुत अधिक हो जाए, बहुत बड़ी संख्या में लोग सन्त हो जाएं और अन्य लोगों को भी आप सन्त बनाएं तो हर तरह से मैं आपके साथ हूँ। अन्यथा मैं आपको उपलब्ध हूँ, मैं आपके साथ हूँ, आप मेरी चैतन्य–लहरियाँ प्राप्त कर सकते हैं, मेरी पूजा भी कर सकते हैं। ये सारी चीज़ें आपको प्राप्त हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु इन सब चीज़ों की योग्यता, इनका अधिकार भी आपको तभी तक है जब आप सहजयोग करते हैं। यदि आप सहजयोग फैला रहे हैं और यदि आप इसे अन्य लोगों को दे रहे हैं केवल तभी आपको देवी की चैतन्य लहरियाँ प्राप्त करने के योग्य माना जाएगा। कुछ देशों में यदि सहयजोग इतना शक्तिशाली है तो आपके देश में, आपके पड़ोस में, आपके सम्बन्धियों में यह इतना शक्तिशाली क्यों नहीं? अतः आपको यह निर्णय करना है कि अन्य लोगों को आत्म–साक्षात्कार देने के लिए आप स्वयं को समर्पित कर दें। सहजयोग के विषय में बात–चीत करना अत्यन्त आनन्ददायक है।

परमात्मा आपको धन्य करे।

मकर संक्रान्ति पूजा

पुणे – 14.1.2002

(परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

मकर संक्रान्ति का अर्थ है – संक्रमण अर्थात कुछ बदलाव लाने वाला दिन। इस दिन सूर्य का उत्तरायण शुरु होता है। हमारे भारत वर्ष में सारे त्यौहार चन्द्रमा की स्थिति के अनुसार चलते हैं, इसलिए उनकी तिथि बदलती रहती है। मकर संक्रान्ति का दिन सूर्य की स्थिति पर निर्भर है और यही कारण है कि ये पर्व हर साल चौदह जनवरी को ही मनाया जाता है।

मकर संक्रान्ति इस बात का संकेत है कि आज से सूर्य की गर्मी बढ़ती जाएगी। सूर्य की उष्णता मानव जाति के लिए हितकारक है। इसी उष्णता के कारण हम चल–फिर सकते हैं, बोल–चाल सकते हैं। सूर्य की गर्मी के प्रभाव से ही मनुष्य को क्रोध आता है इसलिए इस दिन गुड़ खाया जाता है ताकि वाणी मधुर हो जाए।

सूर्य की ऊष्मा से ही पृथ्वी पर धन–धान्य, फल–सब्जियाँ बगैरा होते हैं। इस दिन देवी को फल–सब्जियाँ इत्यादि अर्पण करके देवी का आशीर्वाद लिया जाता है। आदि शक्ति के आशीर्वाद से पृथ्वी तत्व शान्त हो जाता है और मानव जाति की उन्नति होती है।

संक्रान्ति के त्यौहार का सांस्कृतिक महत्व है। भारतवर्ष में यह त्यौहार बड़े उत्साह से मनाया जाता है। अन्य देशों में भी इसे मनाया जाता है। परन्तु भारत वर्ष में इसका विशेष महत्व है। भारत वर्ष में न ज्यादा सर्दी पड़ती है और न ज्यादा गर्मी। यहाँ सन्तुलित स्थिति है। भारत वर्ष पर आदिशक्ति की कृपा है। अन्य देशों में सन्तुलन नहीं है। वहाँ पर या तो भयंकर सर्दी होती है या भयंकर गर्मी।

प्रकृति तथा मौसम के परिवर्तन के साथ हमारे अन्दर परिवर्तन आना उचित नहीं है। सूर्य की गर्मी के कारण यदि हमारे अन्दर भी गर्मी आ जाए, हमें क्रोध आए तो ये बात ठीक नहीं। क्रोध करना गलत है। षड्रिपुओं में क्रोध सबसे खराब है। हम लोग सहजयोगी हैं, हमारी जागृति हो चुकी है, अतः हमें शान्त रहना सीखना चाहिए। वैसे तो सहजयोगी बहुत अच्छे हैं, उन्नत हैं। बहुत कम, तकरीबन एक प्रतिशत लोग ही अलक्ष्मी के पीछे लगे हुए हैं। इस पर गुस्सा आना स्वाभाविक है। परन्तु उनको सुधारना आपका काम नहीं, ये कार्य आदिशक्ति का है। आपको शान्त रहकर उन्नति करनी चाहिए। सभी कार्य परमात्मा

की कृपा से होते हैं। इस बात का हमेशा ध्यान रहना चाहिए। कुछ लोग खराब होते हैं, पैसे को ही सब कुछ मानते हैं। ऐसे लोगों का सहजयोग में कोई काम नहीं। परन्तु इनका इलाज आपके पास नहीं है। आदि–शक्ति स्वयं उन्हें संभाल लेंगी।

अमरीका के राष्ट्रपति श्री जार्ज बुश साहब भी मुझे मानते हैं। हाल ही में मैंने उन्हें एक पत्र लिखा और तुरन्त ही स्थिति बदल गई। जनरल मुशर्रफ में भी बदलाव आया और जनरल मुशर्रफ ने श्री बुश को लिखे मेरे पत्रानुसार अपने देश तथा इस्लाम को संबोधित किया। अपने पत्र में जो मैंने लिखा था वही सब उनके भाषण में सुनाई दिया।

आप भी स्थिति को इसी प्रकार संभाल सकते हैं। परन्तु इसके लिए आपको सूक्ष्मता एवं चैतन्य की स्थिति में रहना होगा। आध्यात्मिक ज्ञान का होना आवश्यक है, बाकी सारी इच्छाएं व्यर्थ हैं। हमें सांसारिक इच्छाएं नहीं करनी चाहिए। सहजयोगियों को अभी बहुत दूर जाना है। उन्हें अभी बहुत से उपक्रम पूरे करने हैं। परमात्मा सभी कार्यों को पूर्ण करेंगे। चिन्ता न करें, शान्त रहें।

संक्रान्ति का अर्थ है सूर्य शक्ति। सूर्य–शक्ति अर्थात आत्म विश्वास। सूर्य उष्णता है, तेज है। अब यह हम पर निर्भर करता है कि इस उष्णता से दग्ध होना है या सूर्य के तेज से आत्म–विश्वास प्राप्त करना है – तेजस्वी बनना है।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

प्रिय सहजयोगी/सहजयोगिनी

जय श्री माता जी,

आपके पते में यदि किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन हो या आप कभी स्थानातंरण करें तो कृपा करके तुरन्त अपना नया पता हमें लिखें ताकि आपकी चैतन्य लहरी की प्रति हम समय पर आप तक पहुँचा सकें। चैतन्य लहरी के विषय में आपका यदि कोई सुझाव आदि है तो उसके विषय में भी हमें लिखने में संकोच न करें।

आपके उत्थान की मंगल कामना करते हुए।

चैतन्य लहरी

श्री गणेश पूजा

8.8.1989

(परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

आज आप श्री गणेश की पूजा करने के लिए यहाँ आए हैं। हर पूजा से पूर्व हम श्री गणेश की स्तुति गान करते हैं और हमारे हृदय में श्री गणेश का स्थान है क्योंकि हम ये बात समझ चुके हैं कि जब तक हमारी अबोधिता के प्रतीक श्रीगणेश हमारे अन्दर जागृत नहीं हो जाते, हम परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते और वहाँ रहने के लिए भी हमें श्री गणेश के आशीर्वाद का आनन्द लेना पड़ता है। अपने पावित्र्य को सदैव पुष्पित रखना पड़ता है। इसलिए हम उसकी स्तुति करते हैं और वे सुगमता से प्रसन्न हो जाते हैं। और सहजयोग में आने से पूर्व जो अपराध हमने किए होते हैं उन्हें वे पूर्णतः भूल जाते हैं क्योंकि वे अनन्त बालक हैं।

आपने बच्चों को देखा है। उन्हें चाँटा मार दें, कभी उनसे नाराज़ हो जाएं, फिर भी वे इसे भूल जाते हैं। वे केवल प्रेम को याद रखते हैं आपके द्वारा दिए गए कष्टों को नहीं। बड़े हो जाने तक उन्हें कष्टकर चीज़ों की स्मृति नहीं रहती। बच्चा आरम्भ से ही माँ की कोख़ से जन्म लेने के पश्चात् अपने कष्टों को याद नहीं रखता। शनैः शनैः स्मृति कार्य करने लगती है और वह सभी घटनाओं को स्मृति–पटल पर एकत्र करने लगता है। परन्तु आरम्भ में तो वह केवल अपने साथ घटित अच्छी चीज़ों को ही याद रखता है। यही कारण है कि हम सदैव अपने बचपन के विषय में सोचना पसन्द करते हैं–उन चीज़ों के विषय में जिनका आनन्द हमने शैशवकाल में लिया था, सभी कष्टों, सभी उपद्रवों तथा उन सभी कष्टों को जिनमें से हम गुजरे हैं याद रखने लगते हैं। इन्हें हम विस्तृत करने का प्रयत्न करते हैं। बचपन में बच्चे केवल उन्हीं लोगों को याद रखते हैं जिन लोगों ने उनसे प्रेम किया हो, उन लोगों को नहीं जिन्होंने उन्हें सताया हो। सभवतः वे ऐसे लोगों को याद रखना ही नहीं चाहते। ऐसा प्रतीत होता है। परन्तु जब वे बड़े हो जाते हैं तब वे केवल उन्हीं को याद रखना चाहते हैं जिन्होंने उन्हें सताया हो, कष्ट दिया हो। इस प्रकार वे स्वयं को दयनीय बना लेते है।

परन्तु श्री गणेश का सिद्धान्त (तत्व) अत्यन्त सूक्ष्म है–सूक्ष्मातिसूक्ष्म। सभी चीज़ों में यह विद्यमान है। भौतिक पदार्थों में यह

चैतन्य लहरियों के रूप में विद्यमान है। चैतन्य–लहरियों के बिना कोई भी पदार्थ नहीं होता। सभी पदार्थों में चैतन्य लहरियाँ होती हैं और इन चैतन्य लहरियों को सभी पदार्थों के अणु–परमाणुओं में देखा जा सकता है। अतः श्रीगणेश प्रथम देवता हैं जिन्हें भौतिक पदार्थ में भी स्थापित किया जा सकता है। परिणामस्वरूप हम देख सकते हैं कि यह तत्व सूर्य में, चाँद में, पूरे ब्रह्माण्ड में, पूरी सृष्टि में और मानव में भी विद्यमान है। केवल मानव ही अपने कर्मों के कारण अपनी अबोधिता पर आवरण चढ़ा लेता है, अन्यथा पशु तो अबोध हैं। मानव स्वतन्त्र है, वह यदि चाहे तो अपने पावित्र्य को आच्छादित कर सकता है और श्री गणेश के लिए अपने द्वार बन्द कर सकता है और कह सकता है कि श्री गणेश का अस्तित्व ही नहीं है। मानव अपनी अबोधिता को धुँधला कर देता है। यही कारण है कि श्री गणेश के अस्तित्व को अनदेखा करके मानव सभी प्रकार के कुकृत्य करता रहता है। परन्तु उसके कार्य ऐसे होते हैं जिनसे उसके द्वारा किए गए कुकृत्यों के स्वाभाविक परिणाम भी दिखाई पड़ते हैं। जैसे व्यक्ति यदि उन कार्यों को करता है जो श्री गणेश को अच्छे नहीं लगते तो कुछ सीमा तक तो यह चलता है, एक सीमा तक श्री गणेश उसे क्षमा करते हैं, परन्तु अन्ततः वह कुकृत्य बीमारियों के रूप में, शारीरिक बीमारियों के रूप में और महिलाओं में मानसिक रोगों के रूप में प्रकट होने लगते हैं। लोगों के दुष्कर्मों के कारण प्रकृति में भी समस्याएं उत्पन्न होने लगती हैं। प्राकृतिक विपदाएं केवल श्री गणेश का ही अभिशाप होती हैं। **सामूहिक रूप से लोग जब दुष्कर्म करने लगते हैं, दुराचरण करने लगते हैं तब उन्हें सबक सिखाने के लिए प्राकृतिक विपदाएं आती हैं।** अपने सार के रूप में यद्यपि श्री गणेश हर चीज़ में विद्यमान हैं, उनमें पूरे विश्व को नष्ट करने की अपनी शक्ति दर्शाने की भी क्षमता है। हम श्री गणेश को सूक्ष्म अस्तित्व के रूप में मानते हैं। हम मानते हैं कि छोटे से चूहे की सवारी करने वाला ये देवता भी सूक्ष्म ही होगा।

वे जितने सूक्ष्म हैं उतने ही महान भी हैं। अपने विवेक के कारण वे सभी देवताओं के शिरोमणि हैं। वे विवेक के देवता हैं। सीखने के लिए वे हमें विवश करते हैं। वे हमारे गुरु हैं या ये कहूँ कि महागुरु हैं क्योंकि वे हमें सिखाते हैं कि किस प्रकार आचरण करना है। हम यदि उनकी अवमानना करने का या उनसे दुर्व्यवहार करने का प्रयत्न करेंगे तो माँ (श्रीमाताजी) भी इस कार्य को अच्छा न मानेंगी क्योंकि वो जानती हैं कि श्री गणेश की अवमानना करने वाले लोग माँ का भी सम्मान नहीं करते। अतः वे सम्मान के प्रतीक हैं। वे किसी अन्य देवता को नहीं पहचानते। वे सदाशिव को भी नहीं पहचानते, किसी अन्य को भी वे नहीं पहचानते। वे केवल अपनी

माँ का सम्मान करते हैं। अतः वे अपनी माँ के प्रति श्रद्धा एवं पूर्ण समर्पण की शक्ति हैं और यही कारण है कि वे सभी देवताओं में सर्वशक्तिशाली हैं और उनकी शक्तियों को कोई भी पार नही कर सकता।

हमें ये बात समझनी चाहिए कि ज्यों–ज्यों बच्चे बढ़ते हैं उनके अन्दर श्री गणेश भी बढ़ते हैं। परन्तु मनुष्य होने के कारण किसी न किसी प्रकार से वे श्री गणेश को अभिभूत (Over Power) करने का प्रयत्न करते हैं इसलिए सहजयोगी माता–पिताओं का ये कर्तव्य है कि निर्लिप्त भाव से अपने बच्चों की इस प्रकार देखभाल करें कि उनमें श्री गणेश स्थापित हो जाएं। बच्चे में उसका विवेक श्रीगणेश की पहली पहचान है। बच्चा यदि विवेकशील नहीं है, कष्टकर है, यदि वह व्यवहार करना नहीं जानता, तो इससे प्रकट होता है कि वह श्रीगणेश पर आक्रमण कर रहा है। और आजकल, इस आधुनिक युग में, बच्चों पर निरन्तर आक्रमण हो रहा है। लोगों के लिए यह निर्णय कर पाना अत्यन्त कठिन हो गया है कि किस सीमा तक बच्चों के साथ समझाएं और किस सीमा तक न जाएं।

आज का भाषण इसी चीज़ पर होगा कि बच्चों के श्रीगणेश तत्व के मामलों में किस सीमा तक हमें जाना है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि श्री गणेश ही विवेक के दाता हैं। अतः माता–पिता को यह बात समझनी चाहिए यदि श्रीगणेश विवेक के दाता हैं तो मुझमें भी विवेक होना चाहिए। यदि मुझमें विवेक है तो मुझमें सन्तुलन होगा और मैं बच्चों से नाराज़ न होऊंगा और उन्हें इस प्रकार से सुधारने का प्रयत्न करूंगा जिससे वे सुधर जाएं। इसके विपरीत यदि आप अपने बच्चों के प्रति कठोर होंगे तो वे प्रतिक्रिया कर सकते हैं और भटक सकते हैं। आप यदि उन पर बहुत अधिक बन्धन लगाएंगे तो वो भी उसी प्रकार से व्यवहार करेंगे।

अतः अपने बच्चों को एक चीज़ अवश्य सिखाएं–जैसे श्रीगणेश अपनी माँ का सम्मान करते है वैसे ही तुम अपनी माँ का सम्मान करो। अपनी माँ का अर्थ है आपकी परमेश्वरी माँ, आपकी अपनी माँ। ये बहुत महत्वपूर्ण है। पिता यदि बच्चों को माँ का सम्मान करना न सिखाए तो बच्चा कभी ठीक नहीं हो सकता क्योंकि इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि अधिकार (Authority) पिता का हक है, परन्तु माँ का सम्मान होना आवश्यक है। माँ को भी चाहिए कि पिता का सम्मान करे। वर्तमान स्थिति में यदि माता–पिता परस्पर झगड़ने लगें, एक दूसरे से उचित व्यवहार न करें तो इसका कुप्रभाव बच्चे के गणेश तत्व पर पड़ेगा। सहजयोग में ये बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि परमात्मा की कृपा से आप सबको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है। अतः आपको इस बात की समझ होनी चाहिए कि अपने बच्चों के साथ किस

सीमा तक जाना है। उन्हें विवेकशील, चरित्रवान और धर्मपरायण बनाने के लिए पहली आवश्यकता उनके विवेक को बनाए रखने की है। वे यदि कोई विवेकपूर्ण बात कहें तो आपको चाहिए कि उसकी सराहना करें। परन्तु यह बात उन्हें उचित समय पर और सम्मान पूर्वक कहनी चाहिए। अतः उनका अभद्र व्यवहार भी सहन नहीं किया जाना चाहिए। अर्थात जो भी प्रकाश उनमें है जो भी विवेक उनमें है, प्रकाश की तरह से उसकी अभिव्यक्ति बाहर होनी चाहिए।

अब हम आगे चलकर यह देखते हैं कि कहाँ तक श्री गणेश कार्य करते हैं। जैसा मैंने कहा, कण–कण में श्री गणेश विद्यमान हैं। परन्तु आपको उन्हें जागृत करना होगा। उदाहरण के रूप में आपने चैतन्यित जल देखा है। चैतन्यित का अर्थ क्या है? चैतन्यित का अर्थ है कि जल में गणेश तत्व को जागृत किया जा रहा है। ये जल जब आपके पेट में जाता है, आँखों में जाता है या कहीं अन्य आप इसे डालते हैं तो यह कार्य करता है। जिस चीज़ में आप इसे डालते हैं वहाँ ये गणेश तत्व को जागृत करता है। आपने देखा है कि कृषि के क्षेत्र में चैतन्यित जल से चमत्कार हुए हैं। कृषि में इन चमत्कारों को देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गए। परन्तु यह अत्यन्त साधारण बात है। एक बार जब आप बीज में गणेश तत्व को जागृत करते हैं तो यह दस–गुना, कभी–कभी सौ गुना शक्तिशाली हो जाता है। यहाँ तक कि मृत–सम प्रतीत होने वाली पृथ्वी माँ को भी जागृत किया जा सकता है। आप सहजयोगी यदि पृथ्वी पर नंगे पाँव चलें तो यह चैतन्यित हो जाती है। तब इस पृथ्वी का प्रभाव घास पर, पेड़ों पर, फूलों पर देखा जा सकता है। सहजयोगी मुझे बताते रहे हैं कि अपने आश्रमों में जो फूल वो उगाते हैं उनके आकार बहुत बड़े होते हैं और वो बहुत सुगन्धमय होते हैं। लन्दन तथा इंग्लैण्ड के डेज़ी पुष्पों में कभी सुगन्ध न हुआ करती थी, इनका आकार भी बहुत छोटा होता था। अब वहाँ पर ये पुष्प बहुत बड़े आकार के तथा सुगन्धी से परिपूर्ण हो गए हैं। ये चमत्कार है। पहली बार जब मैंने किसी को बताया कि डेज़ी पुष्प अत्यन्त सुगन्धमय हैं तो उसे विश्वास न हुआ, परन्तु पुष्प की सुगन्धी को महसूस करके वे हैरान हो गए।

इसी प्रकार गणेश तत्व जागृत होकर चीज़ों को समझता है, इनका आयोजन करता है, इन्हें कार्यान्वित करता है। परन्तु गणेश तत्व यदि सुप्त हो, जागृत न हुआ हो तो यह कार्य नहीं करता। जागृत होकर यह कार्य करता है, कार्यान्वित करता है। जैसे एक छोटा सा बीज जब अंकुरित होता है तो इसकी नोक पर विद्यमान छोटे से कोषाणु में गणेश तत्व होता है जो जागृत हो रहा होता है। ये जानता है कि पृथ्वी में किस प्रकार घूमना है, किस प्रकार

फैलना है और किस प्रकार जल के स्रोत तक पहुँचना है। इसमें इस बात का विवेक होता है कि जीवित रहने और पोषण प्राप्त करने के लिए किस सीमा तक जाना है। भौतिक स्तर पर किस प्रकार वृक्ष को बढ़ने की आज्ञा देनी है। ये गणेश तत्व आज्ञा चक्र के स्तर पर आकर सूक्ष्मातिसूक्ष्म हो जाता है। आज्ञा चक्र पर ये जान जाता है कि अब इसका आध्यात्मिक आयाम (Dimension) है। जड़ के सिरे पर कार्य करने वाला छोटा सा गणेश तत्व का कोषाणु अब आध्यात्मिकता के लिए गतिशील हो उठता है। यही कारण है कि ध्यान करते हुए लोग अपनी आँखें मूँद लेते हैं, अब वे किसी अन्य चीज़ को देखना नहीं चाहते। उनकी इच्छा होती है कि कुण्डलिनी की ध्यान प्रक्रिया में केवल श्री गणेश ही कार्य करें। ध्यान के समय जब हम आँखें बन्द करते हैं तो ध्यान की ये शैली क्रियाशील होती है। नींद में स्वप्न लेते हुए किसी व्यक्ति को यदि हम देखें तो हम पाएंगे कि हर समय उसकी आँखें हिलती डुलती रहती हैं। आपके चित्त से अब यह गणेश तत्व गतिशील हो उठा है। अब भी यदि आपका चित्त सदैव एक चीज़ से दूसरी चीज़ पर, एक स्थान से दूसरे स्थान पर भागता है तो यह प्रभावित है। विशेषरूप से यदि हम हर समय किसी पुरुष या स्त्री को ही ताकते रहते हैं तब भी हमारा गणेश तत्व अशान्त हो उठता है। ऐसे लोगों की कुण्डलिनी उठाना बहुत कठिन होता है क्योंकि उनके आज्ञा चक्र की स्थिति बिगड़ी हुई होती है। ऐसी परिस्थितियों में गणेश तत्व भी प्रभावित हो सकता है। आप यदि बहुत अधिक भौतिक वादी हैं, हर समय भौतिक पदार्थों के लिए चिन्तित रहते हैं, हर समय घर की चीज़ों के विषय में चिन्तित रहते हुए उनकी देखभाल करते रहते हैं, तब भी यह गणेश तत्व बिगड़ सकता है। क्योंकि हर समय आप इन्हीं चीज़ों के विषय में चिन्तित रहते हैं। जैसे दुकानों पर जा–जाकर आप देखते रहते हैं कि वहाँ पर क्या है और मुझे क्या खरीदना चाहिए। आप यदि ऐसा ही करते रहेंगे तो गणेश तत्व प्रभावित रहेगा। परन्तु यदि सौन्दर्य के लिए आप कोई चीज़ खरीदते है, अपने घर को सजाने के लिए आप कोई चीज़ खरीदते हैं तो इसका अर्थ है अन्य लोगों को प्रसन्न करने के लिए आप यह कार्य कर रहे हैं। जब आप अन्य लोगों को प्रसन्न करना चाहते हैं तब यह दूसरी प्रकार कार्य करता है। आपके उत्थान की गति को बढ़ाता है। ऐसा केवल तभी होता है जब आप अन्य लोगों को आनन्द देने के लिए अपनी खरीदी हुई चीज़ों के सौन्दर्य को अन्य लोगों से बाँटने के लिए ऐसा करते हैं। मान लो आप किसी को जलाने के लिए कुछ खरीद रहे हैं–मैंने हाल ही में सुना है कि लोग दूसरों को जलाने के लिए चीज़ें खरीदते हैं, उन्हें प्रसन्न करने के लिए नहीं – यदि वे इस लक्ष्य से चीज़ें खरीदते हैं तो भी गणेश तत्व विक्षुब्ध हो जाता है। अपने घर को सुन्दर बनाने के लिए आपको चीज़ें खरीदनी चाहिएं ताकि

कोई आगन्तुक यदि आपके घर में आए तो कहे कि हमने कितनी सुन्दर चीज़ें देखी!

वस्तुओं से या पदार्थों से मोह नहीं होना चाहिए। चित्त इस बात पर होना चाहिए कि उन्हें देखकर लोगों को कैसा लगता है। किस प्रकार की शान्ति और सुख उन्हें मिलता है। सौन्दर्य रूपी अपने श्रीगणेश को वो देख सकते हैं।

यह भावना जब व्यक्ति में आ जाए तब हमें कहना चाहिए कि गणेश तत्व जागृत है। ये भावना मातृत्व–भाव–सम होती है जिस प्रकार माँ अपने बच्चे को मधुर चीज़ें देना चाहती है इसी प्रकार आपमें भी वात्सल्य है। इसे मातृत्व–भाव कहते हैं। आपमें यह भावना होनी चाहिए कि लोग मेरे घर आएं हैं तो उन्हें अत्यन्त प्रसन्न एवं आनन्दमय होना चाहिए। इस प्रकार से आप महान गणेश तत्व को सन्तुष्ट करते हैं। कलाकारों पर आपकी दृष्टि पड़ती है। कलाकार सृजनात्मक हैं। स्वाधिष्ठान के माध्यम से पदार्थों में से वे सुन्दर चीज़ों का सृजन करते हैं परन्तु स्वाधिष्ठान पर यदि श्रीगणेश जागृत न होंगे तो बनाई गई वस्तुएं सुन्दर न होंगी। आजकल आप देखते हैं कि कलाकार अत्यन्त विकृत और चरित्रहीन चीज़ों का सृजन कर रहे हैं। इन कृतियों का कोई शाश्वत मूल्य नहीं होता। लोग आज इन्हें खरीदते हैं और कल इन्हें फैंक देते हैं। जिन कृतियों में सूक्ष्म गणेश–तत्व क्रियाशील होते हैं वही सुखकर होती हैं। वही व्यक्ति को शान्ति प्रदान कर सकती हैं। ऐसी ही कृतियाँ आपको प्रसन्नता प्रदान करती हैं और इन्हीं की सराहना होनी चाहिए। अतः श्रीगणेश आपके अन्दर उच्च मूल्यों की स्थापना करते हैं और व्यक्ति के अन्दर की अधमता, जो अधमता का आनन्द लेती हैं, कम हो जाती है। कभी–कभी तो श्रीगणेश इस अधमता को पूर्ण रूपेण नष्ट कर देते हैं।

मैं आपको मोनालिसा का उदाहरण दूंगी। मोनालिसा को यदि आप देखें, मैं सोचती हूँ कि वे अभिनेत्री नहीं हैं और न ही सौन्दर्य प्रतियोगी (Beauty Contestant)। उनका मुख अत्यन्त सौम्य है, अत्यन्त मातृत्वपूर्ण, अत्यन्त पावन। कारण ये है कि उसमें गणेश तत्व है, वे माँ हैं। इसकी कहानी इस प्रकार है कि इस महिला का बच्चा खो गया था जिसके कारण ये न कभी मुस्करा सकी न रुदन कर सकी। एक बार जब एक छोटा बच्चा इनके पास लाया गया और उस बच्चे को इन्होंने देखा तो इनके मुख पर बच्चे के प्रति प्रेम की जो मुस्कान उभरी, उसी मुस्कार का चित्रण इस महान कलाकार ने किया है। यही कारण है कि लोग निरन्तर इसकी प्रशंसा करते हैं।

पश्चिमी देशों के लोग भी मोनालिसा के चित्र की प्रशंसा करते हैं यद्यपि माँ बच्चे के सम्बन्धों में उनकी कोई विशेष दिलचस्पी

नहीं है। कहीं भी आप चले जाइए माँ बच्चे का विषय ही सर्वोत्तम है। मैं आपको एक फोटो दिखाऊंगी। यह माँ बच्चे का है, ईसा मसीह की माँ और उनके बच्चे का। ईसा–मसीह के जन्म के समय माँ वहाँ थीं। माँ–बच्चे का सिद्धान्त उन्हें अपनाना ही था। इसके बिना वह चित्र महान नहीं माना जाता, या आपको वास्तव में ईसामसीह को लेना पड़ता, जो कि स्वयं श्री गणेश तत्व हैं। इसमें कोई संशय नहीं है।

मैंने उन दिनों में बनी ऐसी कोई अन्य तस्वीर नहीं देखी है जिनमें ये सिद्धान्त न अपनाए गए हों। पिकासो ने भी इस सिद्धान्त का उपयोग किया है। जो लोग अत्यन्त आधुनिक हैं उन्हें भी लोकप्रिय होने के लिए इस तत्व का उपयोग करना पड़ा। परन्तु लोकप्रिय होने के लिए कुछ लोगों ने श्री गणेश विरोधी सिद्धान्त का भी उपयोग किया। ऐसी सारी चीज़ें हो गई हैं और मैं देखती हूँ कि शनैः शनैः ऐसा सब कुछ पतन के गर्त में जा रहा है। यद्यपि लोगों के चरित्र का पतन हो चुका है फिर भी वे रैमब्रेन्ट को पसन्द करते हैं और लियानार्डो को पाना चाहते हैं। वो ऐसे कलाकारों की कलाकृतियाँ प्राप्त करना चाहते हैं जिनमें माँ–बच्चे का चित्रण किया गया हो। ये आश्चर्य की बात है। इस बार जब मैं आस्ट्रिया गई तो मैंने कहा कि हमारे पास बहुत सुन्दर माँ और बच्चा है। तो ये सिद्धान्त अत्यन्त आनन्ददायी है। मानव के लिए यह सबसे अधिक आनन्ददायी सिद्धान्त है–बच्चों को देखना, उनके साथ खेलना, उनकी संगति का आनन्द लेना। क्यों? क्योंकि जब आप बच्चे को देखते हैं तो उसका माधुर्य आपके हृदय में उतर जाता है। तुरन्त चेहरा खिल उठता है। मैंने आपको बताया था कि मैंने मगरमच्छ को अपने अण्डे तोड़ते हुए देखा है। काश, कि उस समय आपने उस मगरमच्छ की आँखों को देखा होता कितनी सावधानीपूर्वक वह अपने अण्डों को तोड़ रही थी। उसकी आँखें अत्यन्त सुन्दर थीं, प्रेम उन आँखों से फूट पड़ रहा था। आप विश्वास ही नहीं कर सकते कि ये उसी मगरमच्छ की आँखें हैं। इतने आराम से वह अपने मुँह से उन अण्डों को तोड़ रही थी और उनसे छोटे–छोटे मगरमच्छ बाहर निकल रहे थे। उन बच्चों को किनारे पर लाकर उन्हें अपने मुँह में डालकर अत्यन्त सावधानी पूर्वक वह मादा मगरमच्छ उन्हें धो रही थी। आप हैरान होंगे कि अपने मुँह का उपयोग वह स्नानागृह की तरह से कर रही थी!

आपको देखना चाहिए कि पशु किस प्रकार अपने बच्चों पर कार्य करते हैं। परन्तु जब आप तथाकथित आधुनिक बन जाते हैं तब तुम्हारी गतिविधियाँ बड़ी अजीब होती हैं। ऐसे भी लोग हैं जो अपने बच्चों की हत्या कर देते हैं, अपने बच्चों को गाली देते हैं। मेरा कहने का अभिप्राय ये है कि ऐसे लोग राक्षसों से भी बदतर हैं। राक्षसों ने भी ऐसे

कार्य नहीं किए होंगें, पिशाचों ने भी नहीं किए होंगे। गण हैरान हैं कि किस प्रकार के जीव पैदा हो गए हैं, ये कहाँ से आ गए हैं? इनमें अपने बच्चों के लिए भी प्रेम नहीं है, ये अपने बच्चों की हत्या कर सकते हैं उनके हाथ तोड़ सकते हैं! अतः अपने बच्चे के प्रति आपका प्रेम अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु सहजयोगी होने के नाते हमारा प्रेम केवल अपने बच्चों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। दूसरी बात ये है कि हमें अपने प्रेम को सीमाबद्ध करना चाहिए और ये सीमा है–हितैषिता। क्या ये मेरे बच्चे के हित में होगा, क्या मैं अपने बच्चे को बिगाड़ रहा हूँ, क्या मैं अपने बच्चे को बहुत ज्यादा प्रोत्साहन दे रहा हूँ, क्या मैं अपने बच्चे के हाथों खेल रहा हूँ, या मैं अपने बच्चे को ठीक से चला रहा हूँ? शैशवकाल में माता–पिता को ही अपने बच्चों को चलाना होता है। उन्हें बच्चों को प्रशिक्षित करना होता और बच्चों को भी आज्ञाकारी बनकर उनकी बात को सुनना चाहिए। परन्तु आजकल बच्चे आज्ञाकारी नहीं हैं क्योंकि वो जानते हैं कि माता–पिता ही परस्पर आज्ञाकारी नहीं है। पूरा समाज ही इस तरह का बन गया है कि बच्चे माता–पिता को परेशान करते रहते हैं और वो ऐसे ही बन जाते हैं। परन्तु कोई बात नहीं, आप लोग सहजयोगी हैं आपने अपने बच्चों का इस प्रकार पोषण करना है कि वो आज्ञाकारी हों, विवेकशील, संवेदनशील हों। उन्हें वैसा ही प्रेम दें जैसे मगरमच्छ अपने बच्चों को देता है।

गणेश तत्व के सूक्ष्म पक्ष को यदि हम देखें तो इसकी अभिव्यक्ति हमारी आँखों में होती है। मैं जब किसी चीज़ को देखती हूँ तो आनन्ददायी पदार्थ के रूप में इसे देखती हूँ, केवल आनन्दायी चीज़ के रूप में। कोई चीज़ यदि मैं खरीदती हूँ तो मेरे मन में ये भावना होती है कि फलां व्यक्ति के लिए मैं ये चीज़ खरीदूं, उसे अच्छी लगेगी। मैं जानती हूँ कि किसको क्या अच्छा लगता है। इसलिए मैं उसके लिए वही चीज़ खरीदती हूँ। परिवार के लिए कुछ खरीदते हुए भी मैं इसी प्रकार सोचती हूँ। मैंने अभी एक घर बनाया है जिसमें मैं ये सारी चीज़ें, आपके दिए हुए सारे उपहार अजायबघर की तरह से रखूंगी। सभी ग्रामीणों से मैं कहूंगी कि आकर उस अजायबघर को देखें। उन्होंने कभी इस तरह की चीज़ें नहीं देखी हैं और न ही वे स्विटज़रलैण्ड और इंग्लैण्ड की यात्रा कर सकते हैं। इसलिए मैं ये घर इस प्रकार से बना रही हूँ कि ग्रामीण लोग, जिन्होंने इतनी सुन्दर चीज़ें पहले कभी नहीं देखीं, आकर इन्हें देख सकें।

भारत में आम लोगों के मन में ईर्ष्या नहीं होती। ईर्ष्या की भावना तो नए भौतिकतावादी लोगों में उत्पन्न हो गई है। अन्यथा वो हमेशा यही कहते हैं कि कितनी अच्छी चीज़ है! कितनी सुन्दर है! जैसे उस दिन आप लोग पुणे में सहजयोग के भजन गा रहे थे। वास्तव में आप लोगों ने भारतीय संगीत पर बहुत अच्छी पकड़ बना

ली है। जब आप लोग गा रहे थे तो वहाँ पर कुशल संगीतज्ञ भी बैठे हुए थे। वो नाट्य कला में भी सिद्धहस्त थे तथा भारत के सुप्रसिद्ध कलाकार थे। उन्होंने मुझसे प्रार्थना की कि श्री माताजी हम आपका जन्मदिवस मनाना चाहते हैं। मैंने कहा, "ये बहुत कठिन बात है क्योंकि वह स्थान बहुत दूर है। नहीं, नहीं हम आ जाएंगे। पूरी रात और पूरा दिन उन्होंने सफर किया और प्रातः पाँच बजे वो पहुँचे। तीन या चार बजे प्रातः अपना नाटक समाप्त करके पूरा दिन उन्होंने यात्रा की और बैलगाँव से लगभग पाँच बजे पहुँचे। छः साढ़े छः बजे उनका कार्यक्रम था, वो तैयार हुए और शानदार मंच संचालन किया। उन्होंने कहा कि हम लज्जित हैं। हम सोचा करते थे कि हम महाराष्ट्रियन लोग संगीत और तालों में अत्यन्त कुशल हैं, परन्तु जिस प्रकार से इन विदेशी कलाकारों ने हमारा संगीत गान किया है हमें लज्जा आ रही है। इतनी अच्छी तरह से हम भी नहीं गा सकते। यद्यपि हम उनका संगीत नहीं गा सकते परन्तु उन्होंने हमारे भजन गाए। हम सबको बहुत लज्जा तथा उलझन हुई कि किस प्रकार उन्होंने इतना अच्छा गाया! उनकी इतनी सराहना हुई कि मुझे भी उलझन हुई। लोगों ने कहा, कि ये कैसे हो गया है? उनके गुरु ने क्या कर दिया है? ऐसा कौन सा जादू कर दिया है कि ये इतना अच्छा गा रहे हैं। सराहना ने सब पर जादू कर दिया। मेरे ख्याल से उसका ऑडियोटेप हमारे पास है शायद वीडियों नहीं है। आप सभी इसे लें और देखें कि किस प्रकार मेरे बच्चों की सराहना की गई और किस प्रकार उन्होंने संगीत गाया। सभी सुप्रसिद्ध संगीतकार बैठकर इस प्रकार उनकी सराहना कर रहे थे मानो संगीत गायन करते हुए छोटे–छोटे बच्चों की सराहना कर रहे हों।

वास्तव में बात ये थी कि वात्सल्यपूर्ण मधुर आवाज से मातृत्व का सुख मिलता है। आप देखें कि ये बच्चे कितना मधुर गा रहे हैं। सुप्रसिद्ध कलाकार भी जब आप लोगों को इसी प्रकार गाते हुए देखते हैं तो उन्हें भी इसी आनन्द का एहसास होता है कि किस प्रकार ये बच्चे, ये लोग इतना अच्छा गा सकते हैं! किस प्रकार उन्हें इतना ज्ञान प्राप्त हुआ! उस प्रशंसा ने, उस मधुर भावना ने अत्यन्त सुन्दर वातावरण की सृष्टि की। महान कलाकारों ने भी ये नहीं कहा कि, "ये क्या संगीत है? कुछ भी नहीं है।" उन लोगों ने भी इस बात की सराहना की कि भारतीय संगीत का इन लोगों को बिल्कुल ज्ञान न था फिर भी ये इतना अच्छा गा रहे हैं। उस सराहना में मातृत्व, पितृत्व और वात्सल्य भाव था जिसने स्थिति को अत्यन्त सुन्दर बना दिया।

रवि–शंकर जैसे व्यक्ति को यदि यहूदी मैनुहिन के साथ बजाना पड़े तो उनके सम्मुख वह एक बच्चा है। परन्तु मैने देखा

है कि रविशंकर उसकी देखभाल करते हैं, उसे संभालते हैं, हर समय वे उसकी देखभाल करते हैं और उसका संचालन करते हैं। संगीत में हमने ये भी देखा है कि तबला–वादक जब किसी बड़े संगीतकार के सम्मुख बैठता है तो उससे प्रार्थना करता है कि मुझे संभालना, हमेशा अपने अन्दर वात्सल्य की भावना लिए हुए!

जीवन में भी परस्पर मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए ये चीज़ें आवश्यक हैं। जो लोग हमारे से छोटे हैं, जो सुस्थापित नहीं हैं, जो बहुत प्रतिभावान नहीं हैं। या जिन्हें सहजयोग का अच्छा ज्ञान नहीं है। तथा जो सहजयोग में नए हैं, हमें पिता या माता रूप से उनकी देखभाल करनी चाहिए। वे लोग अभी कुशल नहीं है। हमारे अन्दर गणेश तत्व है, हमें चाहिए कि उनके गणेश तत्व को भी उत्साहित करें। आत्मतत्व या उच्च अवस्था को प्राप्त करने के लिए वे हम पर निर्भर हो सकें।

गुरु तत्व पूर्णतः गणेश तत्व से बँधा हुआ है। गुरु में यदि गणेश तत्व नहीं होगा तो वह अत्यन्त भयंकर हो उठेगा और फिर कोई भी उसके साथ न रहना चाहेगा। लोग उससे दूर दौड़ जाएंगे। सच्चा गुरु यद्यपि अपने शिष्यों को दण्डित करता है, उन पर क्रोधित होता है परन्तु मूलतः वह सोचता है ये मेरी सन्तान हैं और मैं इन्हें विकसित कर रहा हूँ, बना रहा हूँ। परन्तु यदि आधुनिकता के नज़रिए से देखें तो लोग कहते हैं कि इनका व्यक्तित्व उभरने दो, इन्हें स्वतन्त्र होने दो। इसलिए माता–पिता अपने बच्चों की देखभाल उस प्रकार से नहीं करते जिस प्रकार से उन्हें करनी चाहिए, कि ये मेरा बेटा है और मुझमें प्रतिभा है यह प्रतिभा मुझे उसमें भी जागृत करनी होगी ताकि वह उन्नत हो सके। इसी पुत्र के माध्यम से मेरा अस्तित्व शाश्वत् बना रह सकेगा। अतः व्यक्तिगत अस्तित्व की ये भावना कि घर से चले जाओ, जो चाहे करो, अपने पैरों पर खड़े होओ, ठीक नहीं है। जीवन एक निरन्तर प्रक्रिया है, यह केवल अपने टाँगों पर खड़ा होना ही नहीं है। व्यक्ति को हर समय पूर्ण से जुड़े रहना है। जब तक आप पूर्ण से जुड़े नहीं रहते आप अबोधिता की सामूहिकता (Collectivity of Innocence) को नहीं समझ सकते।

अबोधिता की सामूहिकता को देखकर कई बार मुझे बहुत प्रसन्नता होती है कि किसी का बच्चा, किसी अन्य व्यक्ति की गोद में अत्यन्त प्रेम से बैठा होता है, मानो वह उसका अपना पिता हो। बच्चे का आकर आपकी गोदी में बैठ जाना, बिना यह जाने कि ये मेरा पिता नहीं है! परन्तु इस बात की चेतना उसे नहीं होती। यह चेतना मेरे और मेरे अपने की भावना को फैलाती है कि यह मेरा है, यह तेरा है और यह आपको एक एहसास प्रदान करती है कि अब हम

माध्यम हैं, यंत्र हैं, गणेश तत्व को अभिव्यक्त करने का साधन हैं। गणेश तत्व अर्थात चैतन्य को अभिव्यक्त करने का।

अतः चैतन्य लहरियाँ, जिनके विषय में आप हमेशा पूछते रहते हैं, श्रीगणेश या ओंकार के अतिरिक्त कुछ भी नहीं और जब स्थिति ऐसी होती है तो केवल वात्सल्य की भावना रह जाती है। माँ और बच्चे के बीच प्रेम की भावना, यही भावना चैतन्य–लहरियाँ है। माँ और बच्चे के बीच की दूरी ही चैतन्य–लहरियाँ हैं। व्यक्ति को यही महसूस करना है कि वह अभी तक बच्चा है और माँ भी हैं जो बच्चे का पोषण कर रही हैं, उसे सारी शक्तियाँ दे रही हैं, प्रेम कर रही हैं। बच्चे की सीमाओं को देखते हए उसकी देखभाल कर रही हैं। बच्चे का सारा माधुर्य और उसके विवेक को समझा जाना चाहिए। यही चैतन्य– लहरियाँ हैं। इसके सूक्ष्म–पक्ष को यदि आप देखें तो आपको पता चलेगा कि यह केवल मेरा बच्चा ही नहीं है, यह सीमा बद्ध नहीं है क्योंकि यह शाश्वत् है, सर्वत्र है। आप इस पर अधिकार नहीं कर सकते। पश्चिमी देशों के लोग जिस प्रकार चीज़ों को लेते हैं उनसे हम भारतीयों को बहुत कुछ सीखना है। हमें स्वीकार करना है कि सुन्दर चीज़ों को संभालने के कौन से तरीके हैं, किस प्रकार सुन्दर तत्वों की देखभाल करनी है और किस प्रकार सुन्दर सम्बन्धों का प्रबन्धन करना है। आपको कठोर नहीं होना, क्रूर नहीं होना। कोई ऐसा कार्य नहीं करना जिससे अन्य लोगों का अपमान हो, ताकि आपके मधुर सम्बन्ध बने रहें।

अतः परमात्मा और आपके बीच सम्बन्ध गणेश तत्व के माध्यम से ही होते हैं। जब आपका सम्बन्ध परमात्मा से बन जाता है तो चैतन्य–लहरियाँ बहती हैं और तब वही सम्बन्ध आपके द्वारा किए गए हर कार्य में फैल जाता है। आपको देखना चाहिए कि केवल वही चीज़ें अच्छी होती हैं जिनमें चैतन्य–लहरियाँ हों।

आज मैं आपको इस सर्वव्यापक शक्ति के विषय में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताऊंगी। ये सर्वव्यापक शक्ति चैतन्य लहरियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। परम चैतन्य–चैतन्य लहरियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। इसमें सारी पहचान, सभी सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं। माता–पिता के सम्बन्ध सभी समाप्त हो जाते हैं, कुछ भी नहीं रहता, केवल चैतन्य लहरियाँ, केवल सूक्ष्म वात्सल्य रह जाता है। केवल चैतन्य लहरियों से ही हर चीज का उद्गम है और यह अपने आपमें ही समाई हुई है। जैसे हम कह सकते हैं कि सूर्य की किरणे निकलती हैं, क्लोरोफिल बनाने का प्रयत्न करती हैं। परन्तु आप सूर्य का मुकाबला उससे नहीं कर सकते या हम कह सकते हैं कि सागर से मेघ निकलते हैं और पृथ्वी माँ का पोषण करते हैं। उनकी भी तुलना नहीं की जा

सकती। हर चीज़ परम–चैतन्य में निहित है।

अतः हम कह सकते हैं कि ज्ञान के अतिरिक्त कुछ नहीं, सत्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, प्रकाश के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। परन्तु जब इसकी तहें (Folds) निकलते हैं और इस चैतन्य की तहों में हम फँस जाते हैं तब अज्ञान में फँस जाते हैं। परन्तु अज्ञान नाम की कोई चीज़ नहीं है, इसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। जैसे अंधेरा है तो इसका कारण है प्रकाश नहीं है। प्रकाश के आते ही अंधेरा समाप्त हो जाता है, इसका कोई अस्तित्व ही नहीं रहता। अतः अज्ञानता का कोई अस्तित्व नहीं है। परन्तु लोग इस सागर की लहरों में फँसकर खो जाते हैं। इस प्रकार हम एक चीज़ को भली–भांति समझ लेते हैं कि हम परम चैतन्य है, परम–चैतन्य से बने हैं, हर समय परम–चैतन्य से घिरे हुए हैं। परन्तु **कभी–कभी हम इसकी तहों (Folds) में खो जाते हैं, क्यों? क्यों हम इन तहों में खो जाते हैं? अपनी अचेतनता के कारण।** चेतनता का आना आवश्यक है कि हम परम–चैतन्य के ही अंग–प्रत्यंग हैं। इस सारी प्रक्रिया को चिद्विलास कहते हैं। ये विलास है। **परमात्मा के चित्त का लीलामय आनन्द लेना।** अब आप पूछेंगे ये कैसे हो सकता है? उदाहरण के रूप में हम सूर्य को देखते हैं। मैं इसी की एक उपमा दे रही हूँ। इसके बाद हम जल को देखते हैं, झील के अन्दर हम जल को देखते हैं। जल वहाँ है और सूर्य के कारण हम जल को देख सकते हैं। तत्पश्चात् मान लो हम मृगतृष्णा को देखते हैं और मान लेते हैं यह जल है और इसके पीछे दौड़ते है। परन्तु ये सभी कुछ सूर्य का खेल है, चाहे ये मृगतृष्णा हो, चाहे ये जल हो, या ये सूर्य हो।

इसी प्रकार से ये परम–चैतन्य कार्य करता है और हम अपनी चेतना में खो जाते है कि हम परम–चैतन्य हैं। इस प्रकार खेल शुरु होता है।

जैसे कल की पूजा से पहले दिन हम वहाँ बैठे हुए थे और वर्षा होने लगी। ये साबित करने के लिए कि मैं वर्षा को नियंत्रित कर सकती हूँ वर्षा हुई। कुछ लोग स्वयं को ढक रहे थे। मैंने बन्धन दिया और कुछ ही देर बाद वर्षा पूजा के स्थान से हटकर पीछे की ओर चली गई। जहाँ हम बैठे हुए थे वहाँ वर्षा न हो रही थी। तत्पश्चात् ऐसा हुआ कि घने बादलों के बीच से सूर्य निकला और चारों तरफ धूप छा गई। इसी प्रकार से आपको परम–चैतन्य की शक्तियों के प्रति चेतन होना होगा।

जब आप बन्धन देते हैं तो चैतन्य को गतिशील करते हैं। मान लो कि आप समुद्र में है और हर समय समुद्र आपको प्रभावित

करता रहता है। समुद्र के अन्दर आप गतिशील नहीं हो सकते। जल से आप ये नहीं कह सकते कि ऐसा करो, वैसा करो। परन्तु **आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति के रूप में आपको शक्ति प्राप्त हो जाती है। अब आप जल से कह सकते हैं कि ठीक है लुप्त हो जाओ। ऐसा करो, वैसा करो, परन्तु यह स्थिति प्राप्त करने के लिए आपको स्वामित्व प्राप्त करना होगा।** स्वामित्व प्राप्त करने के लिए जैसे पदार्थ मानव बन जाता है और मानव को पदार्थ पर स्वामित्व हासिल करना होता है, तभी आप पदार्थ को नियंत्रित कर सकते हैं तो हम उसी पर वापिस आ जाते हैं। चैतन्य लहरियों से हम फसल को नियंत्रित कर सकते हैं, जल को नियंत्रित कर सकते हैं, सूर्य को नियंत्रित कर सकते हैं, चन्द्रमा को नियंत्रित कर सकते हैं। क्योंकि अब एकरूपता स्थापित हो गई है। हमें इस बात का ज्ञान है कि समन्वय स्थापित हो चुका है।

अतः ये सारा खेल मेरे लिए बहुत सुन्दर है। मैं इसे देखती हूँ। अब आप सबको भी ये समझना है कि आप आत्म–साक्षात्कारी बन गए हैं और आपके पास भी ये शक्तियाँ हैं। जिन भी मूर्खतापूर्ण चीज़ों में आप फँसे हुए थे उन्हें अब आप त्याग दें। इन चीज़ों में फँसे रहने में कोई विवेक नहीं है। अब आप विवेकपूर्ण कार्य करें क्योंकि अब आपके अन्दर श्री गणेश जागृत हैं और वे पूर्णतः विवेकशील हैं। विवेक के अतिरिक्त वे कुछ भी नहीं हैं। वे विवेक के दाता हैं। यही कारण है कि वे असुर विनाशक हैं। हमारी चेतना को उन्नत करके वही हमारे सभी कष्टों को दूर करते हैं। ये सत्य है कि कष्ट नहीं रह सकते क्योंकि आप बन्धन देते हैं और यह कार्य करता है।

मैंने किसी व्यक्ति को घटित चमत्कारों के विषय में लिखने को कहा । अब उसका कहना है कि लोगों द्वारा भेजे गए चमत्कार इतने अधिक हैं कि उसका एक बहुत बड़ा ग्रंथ बन गया है। ये तो होना ही था परन्तु आत्म साक्षात्कार से पूर्व जो चीज़ें आपको चमत्कार लगती थीं अब वो चमत्कार नहीं रहीं। आपके लिए चमत्कार का अर्थ ही समाप्त हो गया है क्योंकि अब आपमें शक्ति है और आप ये चमत्कार कर सकते हैं। हर चीज़ पर ये कार्य करता है। आपकी प्रतिभा पर, आपकी सूझ–बूझ पर, आपकी शिक्षा पर तथा सर्वत्र परम चैतन्य कार्य करता है। कुछ लड़के थे उन्होंने बताया कि श्री माताजी हम प्रश्न न हल कर पा रहे थे तो हमने बन्धन दिए, एकदम से उस समस्या का हल सूझ गया और हमने उस प्रश्न का उत्तर लिख लिया। सहजयोगियों के साथ ये सब घटित हो रहा है।

अतः सभी कार्यों में, उन सभी चीज़ों में जो आप करते हैं, आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि परम–चैतन्य कार्य

करता है केवल आपको अपने विषय में और इसके विषय में चेतन होना आवश्यक है, ये कार्य करता है। **एक बार आप चेतना में चले जाएं तो परम चैतन्य कार्य करता है, ये बात आप देख चुके हैं। परन्तु अभी भी बहुत से लोग इस बात को नहीं समझे हैं।** बहुत से लोग यद्यपि अपनी बुद्धि से इस बात को समझ चुके हैं परन्तु हृदय से वे इस सत्य को नहीं समझे और कुछ लोग चाहे इसे हृदय से जानते हैं फिर भी अपने चित्त से इसे गतिशील नहीं करते।

अतः आपको केवल तीन चीज़ों में सुधार लाना है–पहली आपका हृदय, दूसरी आपका मस्तिष्क तीसरा आपका ज़िगर। अपने इन तीनों अवयवों को यदि आप सुधार सकें तो परम चैतन्य गतिशील हो उठेगा। परन्तु धन आदि भौतिक पदार्थों पर चित्त को लगाए रखना व्यर्थ है। परम चैतन्य आपके लिए हर चीज़ की सृष्टि करेगा। हो सकता है ये नोटों का सृजन न करे क्योंकि इसके पास टकसाल नहीं है, परन्तु यह नोटों की संभावना का सृजन अवश्य करेगा। ये बात भली–भांति समझी जानी आवश्यक है और इसका ज्ञान अत्यन्त आनन्ददायी है कि आप परम चैतन्य के प्रति चेतन हैं। और आप इसके स्वामी बन सकते हैं। स्वामित्व से ये अभिप्राय नहीं है कि आप इस पर प्रभुत्व जमा लें, परन्तु आप इसे ऐसे ही कह सकते हैं जैसे जिन्न को कहते हैं। परन्तु कभी–कभी हम परम–चैतन्य का सम्मान नहीं करते, ये बात भी अत्यन्त आश्चर्य चकित करने वाली है। हर समय जिस प्रकार से हम कार्य करते है, जिस प्रकार हम व्यवहार करते हैं जैसे मेरे सम्मुख बैठकर भी लोग आँखें मूँद लेते हैं। वो मेरी साक्षात् की पूजा करने के स्थान पर मेरे फोटो की पूजा करने लगते हैं। कभी–कभी जिस प्रकार से वे कुण्डलिनी को चलाते हैं, जिस प्रकार वे अपने से व अन्य लोगों से व्यवहार करते हैं, ये आश्चर्य जनक होता है। ये सारी चीज़ें समझी जानी आवश्यक हैं क्योंकि अब हम परमात्मा के साम्राज्य में अर्थात परम चैतन्य में प्रवेश कर चुके हैं और इस साम्राज्य के हम महत्वपूर्ण नागरिक हैं। व्यक्ति यदि इस बात को समझ सके तो, मैं सोचती हूँ कि, सहजयोग अत्यन्त सफल होगा। सभी कुछ चमत्कारिक रूप से कार्यान्वित होगा, सभी कुछ गतिशील हो उठेगा। जिन लोगों को इन संभावनाओं का ज्ञान ही नहीं है वे कहाँ पहुँच सकते हैं? उन्हें बाहर फैंक दिया जाता है अर्थात अज्ञानता में, अन्धकार में। परन्तु वे भी पुनः प्रकाश में लौट सकते हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

औरंगाबाद पूजा

19 दिसम्बर, 1989

(परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

मेरे जीवन में औरंगाबाद का विशेष महत्व है क्योंकि मेरे पूर्वज यहाँ से बहुत समीप स्थित पैठन नामक स्थान से सम्बन्धित थे। पैठन का मूल नाम प्रतिष्ठान था। महान काव्य 'रामायण' के सृष्टा ऋषि वाल्मीकि यहीं इसी क्षेत्र में रहा करते थे। प्रतिष्ठान या पैठन तक जाने वाले, गोदावरी के दूसरे किनारे पर शालिवाहन साम्राज्य था।

सीताजी यहीं रहीं। उनका एक पुत्र रूस चला गया तथा दूसरा चीन। कुश चीन गया तथा लव रूस। लव की सन्ताने रूसी लोग स्लाव कहलाते हैं तथा कुश के चीनी वंशज कुशाण।

इसी क्षेत्र में विशालकाय पशुओं तथा तेज–तर्रार, बुद्धिमान एवं संवेदनशील जीवों में विकास के लिए गहन संघर्ष हुआ। अधिकतर विशालकाय पशु नष्ट कर दिए गए, नदी में भारी संख्या में मगरमच्छ रह गए। गज–साम्राट गजेन्द्र एक बार जब वहाँ पानी पी रहा था तो एक विशालकाय मगरमच्छ ने उस पर आक्रमण कर दिया। मगरमच्छ उसे इसलिए मारना चाहता था ताकि हाथियों की नस्ल ही नष्ट कर दी जाए। परन्तु श्री विष्णु जी ने वहाँ प्रकट होकर मगरमच्छ का वध करके गजेन्द्र की रक्षा की। वहाँ रहने वाले विशालकाय पशुओं में से केवल गज ही बचाए जा सके। इसी लिए इस स्थान को 'गजेन्द्र मोक्ष' तीर्थ कहा जाता है।

वाल्मीकि लोगों को लूटा करते थे। वे मछुआरे थे। एक बार जब नारद वहाँ आये तो वाल्मीकि ने उन्हें भी लूटा। नारद ने उससे पूछा कि क्यों वह उन्हें लूट रहा है? वाल्मीकि ने उत्तर दिया – 'क्योंकि मुझे अपने बच्चों, पत्नी तथा विशाल परिवार का पालन करना है।' परिवार में अकेला मैं ही कमाने वाला हूँ। तब नारद ने प्रश्न किया कि 'क्या तुम्हारे बच्चे और परिवार के लोग तुम्हारे लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देंगे?' वाल्मीकि ने कहा "मुझे इसका पूर्ण विश्वास है।" नारद ने उससे कहा कि तुम मृतक सम बन जाओ। वाल्मीकि के मृत–सम शरीर को उठा कर नारद और चार सन्त उसके घर ले गए और उसके परिवार जनों को बताया कि उन्हें लूटते हुए वह मारा गया। परन्तु इसे जीवित करने का एक

उपाय है। इसके स्थान पर आपमें किसी एक को अपना जीवन देना होगा। नारद ने सब को समझाने का प्रयत्न किया परन्तु समी का कोई न कोई बहाना था। कोई भी मरना न चाहता था। अन्ततः बाल्मीकि खड़े हो गए और उन्हें अहसास हुआ कि अब तक वे गलत कार्य कर रहे थे। नारद ने उन्हें 'राम' नाम जपने को कहा। राम कह पाने में असमर्थता जताते हुए नारद ने कहा कि मैं केवल 'मरा, मरा' कह सकता हूँ। तेजी से 'मरा–मरा' कहने पर यह 'राम–राम' बन जाता है। नारद ने कहा कि इससे काम नहीं चलेगा। अपने पापों के प्रायश्चित स्वरूप तुम्हें तपस्या करनी होगी। अतः वह एक पहाड़ पर तपस्या के लिए बैठ गया। यह पर्वत बाद में वाल्मीकि–पर्वत कहलाया। उसके शरीर को दीमक खा गई, केवल गर्दन बच गई। उसकी तपस्या को देखकर श्री विष्णु वहाँ प्रकट हुए और दीमक के प्रकोप से मुक्त कर बाल्मीकि को आत्म–साक्षात्कार प्रदान किया। दीमक को संस्कृत भाषा में वाल्मी कहते हैं। इसीलिए वे वाल्मीकि कहलाए।

बाद में निष्कासित हो कर सीताजी वहाँ आईं। अतः रामायण का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग यहाँ घटित हुआ। शालीवाहन राजाओं ने वाल्मीकि मन्दिर बनाने में बहुत सहायता दी तथा गुरु रूप में वाल्मीकि का बहुत सम्मान किया। वास्तव में शालीवाहनों के गुरु थे। वे नीरा नदी के तट पर रहते थे। यहीं हमने कुछ भूमि भी खरीदी है।

यहाँ के लोग परमात्मा से डरने वाले हैं तथा सन्तों का सम्मान करते हैं। उन्हें सच्चे सन्तों का भी ज्ञान है। मुझे आशा है कि आप इस बात को समझेंगे कि जब हम आत्मा के सुख के विषय में सोचते हैं तो पूरा जीवन आत्मा के प्रकाश से भर जाता है और हमारा पूरा दृष्टिकोण ही प्रकाश रंजित हो उठता है। केवल इतना ही नहीं, अपने सद्गुणों पर हमें पूर्ण विश्वास हो जाता है और हम इनका आनन्द लेने लगते हैं, यद्यपि इस संस्कृति में बहुत अधिक चालाकी या बनावट नहीं है। वे सौ बार 'धन्यवाद' नहीं कहते और न ही 'मुझे खेद है' कहते हैं। प्रायः तो वे अपने हाथ भी नहीं जोड़ते–विशेष रूप से महिलाएं–और न हीं बार–बार 'नमस्कार' कहते हैं। केवल परमात्मा के सम्मुख वे अपने हाथ जोड़ते हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्रीरामपुर में पूजा

21.12.89

(परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

यह बात महत्वहीन है कि आप मुझे क्या देते हैं। यह भी महत्व हीन है कि वायदे कितने किए गए। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि आपने कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया तथा, दूसरे, आप कैसे हैं? क्या आपकी उत्क्रान्ति हुई? क्या आप वास्तव में स्वतन्त्र हो गए हैं? क्या आप बन्धनमुक्त हो गए हैं? क्या अहं से छुटकारा पाकर आप अत्यन्त विनम्र, सुन्दर, करुणामय एवं सामूहिक व्यक्तित्व बन गए हैं? अन्त अवलोकन द्वारा अपने अन्दर झांकने का प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

कार यदि ठीक न हो तो हम उसे चला नहीं सकते। इसी प्रकार बिना आन्तरिक स्थिति को ठीक किए आप उत्क्रान्ति नहीं पा सकते। यह वास्तविकता है। अतः हमारा हर हाल में आनन्दित रहना ही इस बात को दर्शाता है कि हमने कितना कुछ प्राप्त कर लिया है। प्याला यदि छोटा है तो बहुत कम आनन्द इसमें भर सकता है, परन्तु यदि यह समुद्र सम विशाल है तो आनन्द की नदियाँ इसमें समा सकती हैं। **अतः आनन्द की, मनोरंजन की नहीं, बाहुल्यता ही मेरा अभिप्राय है।** मैं उथले–हल्के मनोरंजन की बात नहीं कह रही, **ध्यान के गहन आनन्द को आपने अपने अन्दर स्थापित करना है।** जब आपके अन्दर यह आनन्द उमड़ पड़ता है, आपको खुशियों से भर देता है और आप यह भी नहीं जान पाते कि आप खुश क्यों हैं–बस उस खुशी का आनन्द उठाते रहते हैं।

इसके अतिरिक्त व्यक्ति को कहना है कि मैं वास्तव में सहजयोगी बन गया हूँ। इस अवस्था को आप अन्य लोगों से बाँटना चाहते हैं–इसे अपने तक सीमित नहीं करना चाहते। इसके लिए आप कठिन परिश्रम करेंगे तथा हर सम्भव प्रयत्न करेंगे। आपका मस्तिष्क सोचेगा कि किस प्रकार इसका प्रचार–प्रसार करूं, किस प्रकार अन्य लोगों को सहजयोग दूँ? बिना अन्य लोगों को इसके विषय में बताए आप खुश न हो सकेंगे। अतः पहले आप पूंजीवादी बन जाएं और बाद में साम्यवादी बनें।

प्रथम बात तो यह है कि हमने कितना आनन्द लिया। दूसरी बात यह कि अब हमारे मस्तिष्क में क्या है। बाहर की ओर सहजयोग का विस्तार हम किस प्रकार

करने वाले हैं? पहले प्रकाश को सुधरना होगा तब स्वतः ही यह प्रकाश प्रसारित होगा। हमारे परस्पर सम्बन्ध क्या हैं? हमें झुंड नहीं बनाने। कुछ लोगों की बहुत अधिक गर्दन हिलाने की आदत बन गई हैं। भजन गाते हुए वे अपनी गर्दन तथा शरीर हिलाते हैं। शरीर के साथ ही गर्दन हिलनी चाहिए। मेरे फोटो के सम्मुख बैठ कर ध्यान से पूर्व आप स्वयं को देखें कि मुझ में क्या विकार हैं–तब ध्यान में जाएं।

आज आते हुए मैंने कहा कि यह गलत मार्ग है। उन्होंने पूछा "श्री माताजी, आप कैसे जानती हैं? बस मैं जानती हूँ। आप पता लगाएं। हर चीज़ जानने के लिए जरूरी नहीं कि इसके विषय में आप पूरी जानकारी प्राप्त करें। परन्तु यह इस बात का चिन्ह है कि आप अति–चेतन हो गए हैं। हर चीज़ के विषय में चेतन होना। यह ऐसे नहीं है कि यहाँ बैठ कर आप कहें "यह अत्यन्त सुन्दर है या यह बहुत श्रेष्ठ है।" बात ऐसी नहीं है। न सत्यापित करें न आलोचना करें, परन्तु आप कितना जानते हैं–इस बात को वातावरण में महसूस करें। क्योंकि हमारे पास बहुत बड़ा मस्तिष्क है–हमारे सिर में दो पिंड हैं। यह केवल एक मस्तिष्क नहीं इसके दो पिंड हैं और जब चेतना आपको प्रकाश देने लगती है तब आप अपने अन्दर सभी कुछ समझने लगते हैं, फिर भी आप मौन होते हैं। न तो आपने दावे करने हैं न छल–कपट और न ही स्वयं को थोंपना है। बस चेतना पा लें, यही सुन्दर कार्य व्यक्ति ने करना है। एक अन्य बात जो मैं आपको बता रही हूँ, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारत में रहते हुए आपको चाहिए कि बालों में अच्छी तरह कंघी करें, अन्यथा लोग समझते है कि आप भिखारी हैं। भिखारियों के बाल ऐसे होते हैं। कृपा करके तेल लगाएं और बालों को ठीक से रखें। अपने मस्तक पर आपको गर्व होना चाहिए। यहाँ एकादश हैं। अपने एकादश से आपको पूरे विश्व से युद्ध करना है। अतः ध्यान पूर्वक अपने मस्तक को खुला रखें तथा बालों में तेल लगा कर कंघी करें। रात को बालों में यदि आप तेल डालें तो आपको आराम मिलेगा। ज़िगर के रोगियों के लिए अत्यन्त हितकर है। उन्हें अवश्य सिर में तेल डालना चाहिए क्योंकि वे पहले से ही शुष्क हो चुके हैं। उनके बाल खुश्क होते है, बढ़ते नहीं। शीघ्र ही वे गंजे हो जाते हैं।

अभिव्यक्ति द्वारा आपने सहज संस्कृति को दर्शाना है। हमारे कार्यान्वन तथा शैली से सहज संस्कृति की झलक मिलेगी।

यह भी जांचने का प्रयत्न करें कि आपका चित्त कहाँ है? हर समय चित्त को चित्त पर रखें। पूछें, 'श्रीमान चित्त आप कहाँ खो गए हैं? इस प्रकार आपका कार्य हो जाएगा।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

पेरू झील कैम्प

केलिफोर्निया